वर्ष-10 अंक-241 पृष्ठ- 8 मूल्यः 3 रूपये

प्रयागराज, गुरुवार 05 दिसम्बर 2024

TM

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

आधुनिक समाचार

प्रयागराज से प्रकाशित एवं सम्पूर्ण भारत वर्ष में प्रसारित

आधुनिक समाचार नेटवर्क

Download From Google Play

Adhunik Samachar

नगर संस्करण

10

संक्षिप्त समाचार

ब्लू लाइन पर चोर काट ले गए केबल, इस रूट पर बढ़ी यात्रियों की मुश्किलें

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। राजेश व व कोमल की शादी की बुधवार को 27 वीं सालगिरह थी। सालगिरह बनाने की तैयारियां हो रही थी। पूरा परिवार रात को साल गिरह मनाने की तैयारी की बात कर सोया था। मगर क्या पता था कि शादी की 27वीं सालगिरह का दिन उनका आखिरी दिन होगा।
दक्षिण दिल्ली के देवली गांव में बेटे अर्जुन (20) ने सेना से

सेवानिवृत्त पिता राजेश कुमार (51), मां कोमल (46) और बहन कविता (23) की बुधवार सुबह नृशंस हत्या कर दी। बुधवार को ही माता-पिता की 27वीं सालगिरह थी। डीयू से स्नातक कर रहे अर्जुन ने पिता के फौज वाले चाकू (ड्रेगर) से तीनों का गला रेत दिया। इसके बाद वह पुलिस व स्थानीय लोगों को गुमराह करने के लिए जिम चला गया। जिम से लौटने के बाद पड़ोसियों को सूचना दी। दक्षिण जिले के वाहन चोरी निरोधक दस्ते (एएटीएस) ने सीसीटीवी कैमरों की फुटेज, घर से चोरी व लूटपाट के सबूत न मिलने और अर्जुन के चाल-चलन को देखते हुए दिनभर की जांच के बाद शाम को उसे गिरफ्तार कर लिया।
दक्षिण जिला पुलिस उपायुक्त अंकित चौहान के अनुसार, मूलरूप से महेंद्रगढ़ के खेड़ी गांव निवासी पिता के सरेआम पीटने, डांटने व रोकटोक से अर्जुन परेशान था। साथ ही, मां व बहन भी उसके पीछे पड़ी रहती थीं। आरोपी अकेला रहना चाहता था। पुलिस उसे साइको किस्म का युवक बता रही है।

दिल्ली में कानून व्यवस्था बदतर, राजधानी पर अपराधियों का कब्जा'

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। अरविंद केजरीवाल ने कहा कि जब से अमित शाह देश के गृह मंत्री बने हैं और उन्होंने दिल्ली की कानून व्यवस्था को संभाला है, तब से पूरी दिल्ली की कानून व्यवस्था लगभग खत्म हो चुकी है। दिल्ली में महिलाएं असुरक्षित हैं। गैंगस्टर व्यापारियों की दुकानों पर गोलियां बरसा रहे हैं। दिल्ली में जगह-जगह पर नशा बिक रहा है। भाजपा को यह नहीं दिखता।
दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने विधानसभा में दिल्ली की कानून व्यवस्था का मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा कि दिल्ली की कानून व्यवस्था बदतर हो चुकी हैं। दिल्ली पर अपराधियों का कब्जा है। यहां जगह-जगह पर नशा बिक रहा है। सरेआम मर्डर हो रहे हैं। सरेआम शूटआउट हो रहे हैं। महिलाओं से दुष्कर्म हो रहे हैं। भाजपा इसपर चुप है। जब इनसे पूछा जाए तो कहते हैं कि क्राइम मुद्दा ही नहीं है। आम आदमी पार्टी प्रमुख अरविंद केजरीवाल ने सुखबीर बादल पर हमले की निंदा की और कहा कि एक बड़ी त्रासदी को टालने के लिए पंजाब पुलिस प्रशंसा की पात्र है। यह पंजाब एवं पंजाबियों को बदनाम करने की बड़ी शक्तियों की साजिश है। बादल पर हमले को लेकर केजरीवाल ने दिल्ली विधानसभा में कहा।

उच्च टैरिफ की ट्रंप की घोषणा से भारत के लिए पैदा होंगे बड़े निर्यात अवसर, अमेरिकी व्यापार में गिरावट

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। ट्रंप की घोषणा के बाद नीति आयोग के सीईओ बीवीआर सुब्रमण्यम ने कहा, ट्रंप ने जो भी घोषणा की है, मुझे लगता है कि वह भारत के लिए अवसर है। हम पहली स्लिप में खड़े हैं और गेंद हमारी तरफ आ रही है। हम इसे पकड़ेंगे या छोड़ देंगे, यह हमें देखना है। अमेरिका के नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की चीन समेत तीन व्यापारिक साझेदारों पर उच्च टैरिफ लगाने की घोषणा से भारत के लिए निर्यात के बड़े अवसर पैदा होंगे। घरेलू उद्योग को इस अवसर का लाभ उठाने के लिए खुद को तैयार करना चाहिए। ट्रंप ने पिछले सप्ताह मेक्सिको व कनाडा से आयात पर 25 फीसदी सीमा शुल्क और चीन से आयात पर 10 फीसदी अतिरिक्त टैरिफ लगाने की बात कही थी। नीति आयोग के सीईओ बीवीआर सुब्रमण्यम ने बुधवार को कहा, ट्रंप ने जो भी घोषणा की है, मुझे लगता है कि वह भारत के लिए अवसर है। हम पहली स्लिप में खड़े हैं और गेंद हमारी तरफ आ रही है। हम इसे पकड़ेंगे या छोड़ देंगे, यह हमें देखना है। उन्होंने कहा, ट्रंप की इस घोषणा पर अमल से अमेरिकी व्यापार में बड़ी रुकावटें आने वाली हैं, जिससे भारत के लिए बहुत बड़े अवसर पैदा होंगे। इसके साथ ही सुब्रमण्यम ने कहा, भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए व्यापार को सक्रिय रूप से बढ़ावा देने की जरूरत है।

अब सवाल यह है कि अगर हम वास्तव में खुद को तैयार करते हैं, तो इससे निर्यात में बहुत बड़ा उछाल आ सकता है, क्योंकि व्यापार में बदलाव होने वाला है। एजेंसी सुब्रमण्यम की यह टिप्पणी इसलिए अहम है कि ट्रंप ने अपने चुनाव अभियान में भारत को आयात शुल्कों का दुरुपयोग करने वाला और अक्तूबर, 2020 में भी भारत को 'टैरिफ किंग' करार दिया था। ट्रंप ने कारोबारी मुद्रा के तौर पर अमेरिकी डॉलर को बदलने के किसी भी कदम के खिलाफ ब्रिक्स समूह को चेतावनी दी है। अमेरिका भारत का सबसे बड़ा कारोबारी साझेदार है। 2023-24 में भारत ने अमेरिका को 77.51 अरब डॉलर का निर्यात किया था। भारत को आईटी निर्यात से मिलने वाले राजस्व में भी अमेरिका की हिस्सेदारी 70 फीसदी है। भारत के व्यापार परिदृश्य पर जारी रिपोर्ट के अवसर पर नीति आयोग के उपाध्यक्ष सुमन बेरी ने कहा, व्यापार घाटे को लेकर अधिक चिंता की जरूरत नहीं है क्योंकि अर्थव्यवस्था को आयात से अधिक लाभ होता है। उन्होंने कहा, व्यापार सिर्फ निर्यात के बारे में न होकर आयात से भी जुड़ा है। बेरी ने कहा, हमारे पास एक अस्थिर विनिमय दर होने से संरचनात्मक रूप से हमारा व्यापार घाटा होगा। हम निवेश करना चाहते हैं, इसलिए हमारे पास संरचनात्मक रूप से चालू खाता घाटा भी होगा। ये अच्छे हैं, बुरे नहीं। भारत को 'चीन प्लस वन रणनीति' को अपनाने में अब तक सीमित सफलता मिली है, जबकि वियतनाम, थाईलैंड, कंबोडिया और मलयेशिया को इसका बड़ा फायदा मिला है। नीति आयोग की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि सस्ता श्रम, सरल कर कानून, कम शुल्क और मुक्त व्यापार समझौतों (एफटीए) पर हस्ताक्षर करने में तेजी जैसे कारकों से इन देशों को अपनी निर्यात हिस्सेदारी बढ़ाने में मदद मिली। नीति आयोग की रिपोर्ट 'ट्रेड वॉच क्वार्टरली' में कहा गया है कि हाल के वर्षों में श्रम आधारित क्षेत्रों के वैश्विक व्यापार में भारत की हिस्सेदारी घटी है। भारत को प्रमुख उत्पाद श्रेणियों में प्रतिस्पर्धा बढ़ाने की जरूरत है। अमेरिका ने चीन की वृद्धि और तकनीकी प्रगति पर होने वाले खर्च को सीमित करने के लिए चीनी वस्तुओं पर सख्त निर्यात नियंत्रण एवं उच्च शुल्क लागू किया है। इससे वैश्विक आपूर्ति शृंखलाओं में बड़ा बदलाव आया और बहुराष्ट्रीय निगमों को चीन के विनिर्माण का विकल्प तलाशना पड़ा।

कुवैत के विदेश मंत्री ने पीएम मोदी को बताया दुनिया का सबसे बुद्धिमान इंसान, जयशंकर का जताया आभार

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। कुवैत के विदेश मंत्री अबदुल्लाह अली अल याह्या भारत की पहली आधिकारिक यात्रा पर मंगलवार को भारत पहुंचे। जहां बुधवार को यह्या ने पीएम मोदी और समीक्षा और निगरानी के लिए एक संयुक्त आयोग स्थापित करने का निर्णय लिया है। यह निर्णय विदेश मंत्री एस जयशंकर और कुवैती विदेश मंत्री अबुदुल्लाह अली अल याह्या के बीच हुई बैठक में लिया भारत और कुवैत के बीच रिश्तें को और मजबूती देने और द्विपक्षीय संबंधों पर चर्चा के लिए कुवैत के विदेश मंत्री अबदुल्लाह अली अल याह्या अपनी पहली आधिकारिक यात्रा पर मंगलवार को भारत पहुंचे

भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर से मुलाकात की। मुलाकात के बाद याह्या ने पीएम मोदी को दुनिया का सबसे बुद्धिमान इंसान बताया। भारत और कुवैत ने बुधवार को अपने द्विपक्षीय संबंधों की पूरी गया। मुलाकात के बाद जयशंकर ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर अपनी बातचीत को उत्पादक बताया और कहा कि इस समझौते से भारत-कुवैत संबंधों को और आगे बढ़ाने में मदद मिलेगी। बता दें कि थे।उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी को दुनिया के सबसे बुद्धिमान व्यक्तियों में से एक कहा और कहा कि प्रधानमंत्री ने भारत को एक नई ऊंचाई पर पहुंचाया है, और मुझे यकीन है कि वे इसे जारी रखेंगे।

2014 के बाद से नेहरू की आलोचना के माध्यम से चल रहा शासन', पुस्तक लॉन्च पर बोले जयराम रमेश

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने कहा कि हम सब किसी न किसी रूप में नेहरू की छाया में जी रहे हैं। हममें से कई लोगों ने नेहरू को आत्मसात किया है और कुछ उनके विरोधी हैं, लेकिन जो लोग नेहरू का विरोध करते हैं, वे भी उनकी छाया से बाहर नहीं निकल सकते। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता जयराम रमेश ने बुधवार को कहा कि जवाहरलाल नेहरू के आलोचक और प्रशंसक दोनों ही उनकी छाया में जी रहे हैं।

उन्होंने कहा कि 2014 के बाद से भारत में सबसे ज्यादा नेहरू की आलोचना के माध्यम से ही शासन चल रहा है। लेखक-विद्वान आदित्य मुखर्जी की 'नेहरूज़ इंडिया' के लॉन्च पर बोलते हुए कांग्रेस महासचिव ने कहा कि इस किताब की सबसे बड़ी बातों में से एक यह है कि 'न केवल भारत के विचार, बल्कि नेहरू के विचार का भी बचाव करने की जरूरत है।' कांग्रेस महासचिव रमेश ने कहा कि हम सब किसी न किसी रूप में नेहरू की छाया में जी रहे हैं। हममें से कई लोगों ने नेहरू को आत्मसात किया है और कुछ उनके विरोधी हैं, लेकिन जो लोग नेहरू का विरोध करते हैं, वे भी उनकी छाया से बाहर नहीं निकल सकते। जयराम रमेश ने बुधवार को राज्यसभा में पारित बॉयलर बिल, 2024 का उदाहरण दिया। उन्होंने कहा कि 2014 के बाद से देश में नेहरू की आलोचना पर शासन चल रहा है। बॉयलर बिल, बॉयलरों को विनियमित करने वाला एक विधेयक है, जो कारखानों में भाप उत्पन्न करते हैं। संसद में इस बिल की बहस में नेहरू का भी जिक्र था। रमेश ने कहा कि मुझे तब आश्चर्य हुआ, जब मंत्री ने विधेयक को सही ठहराने के लिए कहा कि यह नेहरू के समय में नहीं था। जयराम रमेश ने 1962 के चीनी आक्रमण का भी जिक्र किया। कांग्रेस नेता ने कहा कि जब अटल बिहारी वाजपेयी सहित सात सांसदों ने स्थिति पर चर्चा करने के लिए कहा तो नेहरू ने संसद का प्रारंभिक सत्र बुलाया। उस समय विभिन्न राजनीतिक दलों के सांसदों ने नेहरू पर कड़वा हमला किया और तत्कालीन रक्षा मंत्री वीके कृष्ण मेनन ने इस्तीफा दे दिया।

सब्र और पार्टी के लिए वफादारी का फडणवीस को मिला इनाम, राजनीति के हर फन में माहिर लचीला स्वभाव पहचान

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। जनसंघ और बाद में भाजपा नेता रहे स्व. गंगाधर फडणवीस के बेटे देवेंद्र ने कम उम्र में ही राजनीति में कदम रख दिया था। 1989 में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद में शामिल हुए। 1992 में नागपुर भाजयुमो इकाई के अध्यक्ष बने। इसी साल उन्होंने नागपुर के रामनगर वार्ड से अपना पहला नगरपालिका चुनाव जीता और 21 साल की उम्र में नागपुर नगर निगम के सबसे युवा पार्षद बन गए। महाराष्ट्र के तीसरी बार मुख्यमंत्री बनने जा रहे देवेंद्र फडणवीस राजनीति के हर फन में माहिर हैं। सबसे खास उनका लचीला स्वभाव। मौके की नजाकत को समझते हुए बर्ताव करना। पार्टी के साथ वफादारी। हालिया विधानसभा चुनावों में भाजपा के शानदार प्रदर्शन और विधायक दल के नेता के तौर पर उनके चुनाव ने साफ कर दिया है कि वह राज्य का नेतृत्व करने की कुव्वत रखते हैं। फडणवीस का राजनीतिक सफर एक मिसाल पेश करता है। उन्होंने एक पार्षद के तौर पर जनता

की सेवा करने से लेकर नागपुर के सबसे कम उम्र के मेयर बनने तक का खिताब अपने नाम किया और पार्टी के अंदर एक अहम नेता बनकर उभरे। वह शिवसेना के मनोहर जोशी के बाद महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री बनने वाले दूसरे ब्राह्मण नेता हैं। जनसंघ और बाद में भाजपा नेता रहे स्व. गंगाधर फडणवीस के बेटे देवेंद्र ने कम उम्र में ही राजनीति में कदम रख दिया था। 1989 में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद में शामिल हुए। 1992 में नागपुर भाजयुमो इकाई के अध्यक्ष बने। इसी साल उन्होंने नागपुर के रामनगर वार्ड से अपना पहला नगरपालिका चुनाव जीता और 21 साल की उम्र में नागपुर नगर निगम के सबसे युवा पार्षद बन गए। 1994 में भाजयुमो के प्रदेश उपाध्यक्ष बने। 1997 में 27 साल की उम्र में यहां के सबसे युवा मेयर बने। फडणवीस ने 1999 में अपना पहला विधानसभा चुनाव लड़ा और जीत हासिल की। 2014 के विस चुनावों से पहले फडणवीस की राजनीति के शिखर पर पहुंचने की चढ़ाई शुरू हो गई थी। फडणवीस ने 4,384 किमी लंबी महाजनादेश यात्रा के तहत राज्य की 288 विस सीटों में से 150 सीटों को कवर किया था। 2014 में उनके नेतृत्व में भाजपा ने 122 सीटें जीतीं। इससे प्रभावित होकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एक चुनावी रैली में फडणवीस को 'नागपुर का देश को तोहफा' तक कहा था। महाराष्ट्र के सबसे मुखर राजनेताओं में से एक फडणवीस भ्रष्टाचार के आरोपों से बेदाग रहे हैं। सिंचाई घोटाले को लेकर बीती कांग्रेस-एनसीपी सरकार को मुश्किल में डालने का श्रेय भी इन्हीं को दिया जाता है। उनकी काबिलियत को देखते हुए उन्हें साल 2013 में महाराष्ट्र भाजपा के अध्यक्ष पद पर नियुक्त किया गया।

एस जयशंकर की इस्त्राइली मंत्री नीर से मुलाकात, दोनों देश कारोबार-तकनीकी और निवेश को देंगे बढ़ावा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने कहा, इस्राइली मंत्री नीर बरकत से व्यापार, प्रौद्योगिकी सहयोग की संभावनाएं असीमित हैं। हम हर साल मुनाफे में दो अंकों की बढ़ोतरी हासिल कर सकते हैं। 1992 में राजनयिक संबंध स्थापित

और निवेश सहयोग की क्षमता को मजबूत करने पर बात हुई, हमने क्षेत्रीय घटनाक्रमों पर भी विचार-विमर्श किया।भारतीय विदेश मंत्री एस जयशंकर ने इस्राइल के अर्थव्यवस्था और उद्योग मंत्री नीर बरकत के साथ मुलाकात की। इस दौरान दोनों के बीच कारोबार, तकनीक और निवेश को बढ़ावा देने के तरीकों पर बात हुई। इस मुलाकात को लेकर विदेश मंत्री ने कहा, इस्राइली मंत्री नीर बरकत से व्यापार, प्रौद्योगिकी और निवेश सहयोग की क्षमता को मजबूत करने पर बात हुई, हमने क्षेत्रीय घटनाक्रमों पर भी विचार-विमर्श किया।वहीं, मंत्री बरकत ने दोनों देशों के बीच बेहतर हवाई संपर्क की जरूरत पर बल दिया। इससे व्यापार और पर्यटन में तेजी आएगी। बरकत ने कहा, भारत-इस्राइल होने के बाद से भारत-इस्राइल के संबंध तेजी से बढ़े हैं, खासकर व्यापार के क्षेत्र में। एशिया में भारत इस्राइल का दूसरा सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार है। पारंपरिक रूप से दोनों देशों के बीच व्यापार में हीरे, पेट्रोलियम उत्पाद और रसायनों का वर्चस्व रहा है।बरकत ने हालिया संघर्षों के बाद सुरक्षा चिंताओं पर भी बात की और आश्वासन दिया कि इस्राइल यात्रा और व्यापार के लिए पूरी तरह सुरक्षित है। उन्होंने कहा कि इस्राइली एयरलाइन एल अल की निरंतर सेवाएं क्षेत्र की स्थिरता का सुबूत हैं। उन्होंने आगे कहा, हम चाहते हैं कि उड़ान सेवाएं फिर से शुरू हों, ताकि लोग इस्राइल आएं, घूमें और व्यापार करें। भविष्य में हमें बड़ी संभावनाएं नजर आ रही हैं।

इस बार सर्दियों में नहीं पड़ेगी कड़ाके की ठंड, शीतलहर के दिनों में कमी की यह है सबसे बड़ी वजह

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। मौसम विभाग की ओर से जारी पूर्वानुमान के अनुसार देश के अधिकतर हिस्सों में सर्दियों के दौरान न्यूनतम और अधिकतम तापमान सामान्य से अधिक रहने के आसार हैं। मौसम विशेषज्ञों का

कहना है कि ला नीना की अनुपस्थिति के कारण इस साल सर्दी सामान्य से गर्म रह सकती है। इस बार सर्दियों में कड़ाके की ठंड नहीं पड़ेगी। दिसंबर 2024 से फरवरी 2025 के दौरान देश के उत्तर-पश्चिम, मध्य, पूर्व और उत्तर-पूर्व हिस्सों के अधिकतर इलाकों में शीतलहर वाले दिनों की संख्या भी सामान्य कम रहने की उम्मीद है।मौसम विभाग की ओर से जारी पूर्वानुमान के अनुसार देश के अधिकतर हिस्सों में सर्दियों के दौरान न्यूनतम और अधिकतम तापमान सामान्य से अधिक रहने के आसार हैं। मौसम विशेषज्ञों का कहना है कि ला नीना की अनुपस्थिति के कारण इस साल सर्दी सामान्य से गर्म रह सकती है। ला नीना प्रशांत महासागर और ऊपर के वायुमंडल के बीच परस्पर क्रिया के कारण होता है। ला नीना आमतौर पर ठंडी सर्दियों से जुड़ा होता है, लेकिन इस साल यह घटना नहीं हुई है। ला नीना के दौरान व्यापारिक हवाएं मजबूत हो जाती हैं जिससे जल की बड़ी मात्रा पश्चिमी प्रशांत क्षेत्र की ओर बढ़ जाती है, इससे पूर्वी प्रशांत क्षेत्र में तापमान ठंडा हो जाता है। हालांकि जनवरी, फरवरी 2025 के आसपास ला नीना की स्थिति के विकसित होने की अधिक संभावना जताई गई है। नए वर्ष की शुरुआत तक ला नीना की स्थिति बढ़ने के आसार हैं।दिसंबर महीने के दौरान पूरे देश में बारिश सामान्य से अधिक होने की संभावना है। यह लॉन्ग पीरियड एवरेज (एलपीए) से 121 फीसदी अधिक हो सकती है। प्रायद्वीप के अधिकांश हिस्सों, पश्चिम-मध्य भारत, पूर्व-मध्य भारत और पूर्वोत्तर भारत के कुछ हिस्सों में सामान्य से अधिक बारिश होने की संभावना जताई गई है। भारत के दक्षिणी प्रायद्वीप में सामान्य से अधिक यानी लंबी एलपीए के 131 फीसदी से अधिक बारिश होने की संभावना है। दक्षिणी प्रायद्वीप में तमिलनाडु, पुडुचेरी, कराईकल, तटीय आंध्र प्रदेश, यनम, रायलसीमा, केरल और दक्षिण आंतरिक कर्नाटक शामिल हैं। यहां होने वाली बारिश बारिश का औसत पूरे देश में परिलक्षित हो हो रहा है। अन्यथा देश के अन्य हिस्सों में बारिश ज्यादा नहीं होगी।

कोल ब्लॉक आवंटन पर सुनवाई कर सकें हाईकोर्ट, इसके लिए आदेश में सुधार करेगा सुप्रीम कोर्ट

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने 2014 से 2017 के बीच दो आदेश जारी

किए थे, जिसके जरिए आरोपियों के ट्रायल कोर्ट के आदेश के खिलाफ हाईकोर्ट पहुंचने पर रोक लगा दी गई थी। तब सर्वोच्च न्यायालय ने कहा था कि कोयला घोटाले से जुड़े मामलों में ट्रायल कोर्ट की कार्यवाही के खिलाफ सिर्फ उसके पास ही याचिका लगाई जा सकती है। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को एक मामले पर सुनवाई के दौरान कहा कि वह अपने अपने उस आदेश में सुधार करेगा, जिसकी वजह से हाईकोर्ट अवैध कोल ब्लॉक आवंटन के मामलों पर सुनवाई नहीं कर सकतीं। सुप्रीम कोर्ट ने 2014 से 2017 के बीच दो आदेश जारी किए थे, जिसके जरिए आरोपियों के ट्रायल कोर्ट के आदेश के खिलाफ हाईकोर्ट पहुंचने पर रोक लगा दी गई थी। तब सर्वोच्च न्यायालय ने कहा था कि कोयला घोटाले से जुड़े मामलों में ट्रायल कोर्ट की कार्यवाही के खिलाफ सिर्फ उसके पास ही याचिका लगाई जा सकती है। तब सुप्रीम कोर्ट के इस आदेश का मकसद सुनवाइयों में होने वाली देरी पर रोक लगाना था। इसके साथ ही कोर्ट राहत की मांग के जरिए आरोपियों की कार्यवाहियों को रोकने की कोशिशों पर लगाम लगाना चाहती थी। हालांकि, अब चीफ जस्टिस संजीव खन्ना और जस्टिस संजय कुमार की बेंच ने कहा है कि वह अपने पिछले आदेश में सुधार करने पर विचार करेगी। सुप्रीम कोर्ट में इसे लेकर याचिकाएं भी दायर हुई थीं, जिनमें कहा गया था कि ट्रायल कोर्ट के आदेश आने के बाद दिल्ली हाईकोर्ट को भी कोयला घोटाले से जुड़े मामलों में सुनवाई की छूट दी जानी चाहिए। सुप्रीम कोर्ट ने सीबीआई की तरफ से केसों को देख रहे विशेष सरकारी अभियोजक आरएस चीमा से पूछा कि क्या यह सीबीआई का पक्ष है कि कोयला घोटाले से जुड़े सारे केस हमारे पास आने चाहिए? बेंच ने कहा कि हम चाहते हैं कि इन मामलों में हमें दिल्ली हाईकोर्ट की तरफ से जारी आदेशों का भी फायदा मिले। दूसरी तरफ याचिकाकर्ता की तरफ से पेश हुए वरिष्ठ वकील मुकुल रोहतगी ने कहा कि हाईकोर्ट को ऐसे मामलों में अपील और याचिकाओं की सुनवाई से नहीं रोका जाना चाहिए। दूसरी तरफ एनजीओ कॉमन कॉज की तरफ से वकील प्रशांत भूषण ने कहा कि यह आदेश इसलिए पारित किए गए थे, ताकि ट्रायल कोर्ट की तरफ से जारी आदेशों पर आरोपी हाईकोर्ट जाकर रोक न लगा सकें।

फर्म को काली सूची से हटाने का झांसा देकर बिजली ठेकेदार से एक करोड़ की ठगी, खुद को विशेष सचिव बताया

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। विद्युत विभाग के ठेकेदार अजय यादव की भारत इंटरप्राइजेज के नाम से फर्म है। यह फर्म विभाग में मैन पावर देने समेत अन्य सेवा संबंधित ठेका लेती है। साइबर पुलिस को अजय ने बताया कि सहसों निवासी मुमताज अली फर्म में पार्टनर था विद्युत विभाग के ठेकेदार से 1.01 करोड़ की ठगी का मामला सामने आया है। ठग ने खुद को विशेष सचिव शशांक त्रिपाठी बताकर उनकी फर्म को काली सूची से हटाने का झांसा देकर अलग-अलग बहाने से रकम ऐंठ ली। साइबर थाना पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। विद्युत विभाग के ठेकेदार अजय यादव की भारत इंटरप्राइजेज के नाम से फर्म है। यह फर्म विभाग में मैन पावर देने समेत अन्य सेवा संबंधित ठेका लेती है। साइबर पुलिस को अजय ने बताया कि सहसों निवासी मुमताज अली फर्म में पार्टनर था। जुलाई 2023 में मुमताज से साझेदारी भंग हो गई। इसके बाद से वह परेशान करने लगा। जीएसटी आयुक्त से फर्जी शिकायत पर बिजली विभाग ने उनका भुगतान रोक दिया और फर्म 13 जून 2024 को काली सूची में डाली अगले दिन उनके पास फोन आया। उसने खुद को मुख्य अभियंता वाराणसी जोन बताया। कहा कि एमडी साहब का निर्देश है कि सचिवालय लखनऊ से शंशाक त्रिपाठी (विशेष सचिव) फोन करेंगे, जो काम कहें कर देना। नंबर मुख्य अभियंता का होने पर विश्वास हो गया। थोड़ी देर बाद नए नंबर से व्हाट्सएप पर मैसेज आया। लिखा था कि तीन लड़कों को नौकरी पर रखना है। फिर फोन आया...खुद को शंशाक त्रिपाठी बताते हुए कहा कि मैसेज किया था क्या हुआ? इस पर जवाब दिया कि फर्म काली सूची में है। नियुक्ति नहीं हो सकती है।फोनकर्ता ने कहा कि एमडी पूर्वांचल से बात हो गई है, लड़कों को नियुक्त कर दो कंपनी को काली सूची से बाहर करवा देंगे। फिर शशांक त्रिपाठी ने कहा कि उनकी पूर्वांचल एमडी शंभू कुमार से बात हुई है। छह जुलाई को लखनऊ आना कंपनी को काली सूची से बाहर करवा दूंगा। इसके बाद एक लड़के को कैंसर होने की बात कहकर 10 लाख रुपये मांगे गए। दो लाख रुपये देकर मदद कर दी। वहीं, शशांक की पत्नी राधा को इलाज के नाम पर 10 लाख और धर्मेंद्र सिंह को 15 लाख नकद दिए। कहा कि पत्नी की मौत हो गई है...अब कुछ दिन बातचीत नहीं होगी। फिर फोन आया कि पत्नी की मौत में जांच चल रही है...अब मैं अपने पद पर नहीं हूं। वापस आने पर आपकी सभी समस्याओं का निस्तारण करवा दूंगा। उसी दिन 11 जुलाई 2024 को डीजीपी ऑफिस के नंबर से फोन आया, लेकिन बात नहीं हुई। शशांक त्रिपाठी को फोन करने पर बताया कि मेरी जांच के संबंध में (एडीजी अमिताभ यस) ने फोन किया होगा। उनको कह दूंगा कि आपको परेशान न करें। इस तरह फर्म को काली सूची से निकालने के नाम कुल 86 लाख रुपये और 15 लाख रुपये नकद चुके हैं।शिकायतकर्ता ने बताया कि 30 जून को कई बार फोन आया। यह नंबर ९९१ से शुरू न होकर केवल ९ से शुरू था। इसके बाद अन्य नंबर से आए फोन पर खुद को यूपीपीसीएल का डायरेक्टर फाइनेंस बताया। पांच सितंबर को शशांक ने जीपी सिंह ठेकेदार वाराणसी का दिया। ये 10 लाख रुपये की व्यवस्था करा देंगे। बात करने पर एमडी कार्यालय वाराणसी बुलाया। इस बीच साले नीरज को अधिकृत असलहा समेत पकड़ लिया। साजिश के तहत एक फर्जी एफआईआर थाना चितईपुर वाराणसी में दर्ज कराई गई। साले को फिर भी जेल भेज दिया गया। दोष मुक्त के नाम पर 15 लाख और मांगे गए। आरोप है कि साझेदार मुमताज अली की जानकारी देने पर साइबर ठगी हुई है।

साइबर ठगों ने राजरूपपुर के डॉक्टर से ठगे 50 लाख रुपये, ठगों ने खुद को बताया बैंक मैनेजर

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

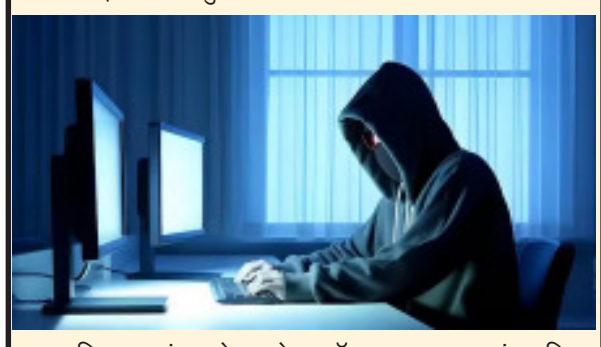

प्रयागराज। साइबर थाना पुलिस ने ठगों के खिलाफ केस दर्ज किया है। धूमनगंज के राजरूपपुर में डॉ. आनंद प्रकाश श्रीवास्तव परिवार समेत रहते हैं। जबकि उनका बेटा बिहार के लखीसराय में रहता है। उन्होंने साइबर थाना पुलिस को लिए कुछ दिन पहले 16 अक्तूबर को उन्होंने इंटरनेट पर सर्च किया। यहां से मिले नंबर के माध्यम से लखीसराय के पीएनबी में फोन किया। मैनेजर के लिए पूछा तो जवाब मिला कि वह मैनेजर मनोज कुमार है। जीवन प्रमाणपत्र बनवाने की जानकारी देने पर उसने

बताया कि एक नवंबर को उनको लखीसराय जाना था। साइबर ठगों ने धूमनगंज राजरूपपुर के रहने वाले डॉ. आनंद प्रकाश श्रीवास्तव के बेटे का जीवन प्रमाण पत्र बनाने के नाम पर 50 लाख रुपये की ठगी कर ली। ठगों ने खुद को पीएनबी का मैनेजर बताकर घटना को अंजाम दिया है। साइबर थाना पुलिस ने ठगों के खिलाफ केस दर्ज किया है। धूमनगंज के राजरूपपुर में डॉ. आनंद प्रकाश श्रीवास्तव परिवार समेत रहते हैं। जबकि उनका बेटा बिहार के लखीसराय में रहता है। उन्होंने साइबर थाना पुलिस को बताया कि एक नवंबर को उनको लखीसराय जाना था। इसलिए बेटे का जीवन प्रमाण पत्र बनवाने के व्हॉटसएप पर एक नंबर दिया। कहा कि एपीके फाइल के लिए इस नंबर पर संपर्क कर लें। इसके बाद खाता नंबर के साथ एटीएम पिन मांगा। मना करने पर कहा कि सिस्टम में अपलोड करना है कोई दिक्कत नहीं होगी। जानकारी देते ही खाते ही कुल 50 लाख रुपये की रकम निकाल ली गई। शिकायत के आधार पर साइबर थाना ने केस दर्ज किया है। वहीं, पुलिस अब मोबाइल नंबर और ठगों के खातों के आधार पर आरोपियों की पहचान करने में जुट गई है। पुलिस अफसरों का कहना है कि ठगों को जल्द गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

स्वामी स्वरूपानंद ने हनुमानजी के दिव्य गुणों का किया बखान, भाव विभोर हुए भक्त

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

प्रयागराज। ये कक्षायें एक से चार दिसंबर तक रसूलाबाद स्थित मिशन की प्रयाग शाखा के अखिलेश्वर महादेव मंदिर में पूरी भव्यता के साथ संपन्न हुई। कार्यक्रम के समापन में एक से चार दिसंबर तक रसूलाबाद स्थित मिशन की प्रयाग शाखा के अखिलेश्वर महादेव मंदिर में पूरी भव्यता के साथ संपन्न हुई। कार्यक्रम के समापन में मिशन के वरिष्ठ सदस्यों एवं अन्य पदाधिकारियों ने

मिशन के वरिष्ठ सदस्यों एवं अन्य पदाधिकारियों ने स्वामीजी के प्रति हृदय से आभार प्रकट किया तथा कक्षा की भूरि-भूरि प्रशंसा की। गंगा तट पर स्थित चिन्मय मिशन में चार दिवसीय ज्ञान यज्ञ, मिशन के विश्व प्रमुख स्वामी स्वरूपानंद के प्रवचन का समापन हुआ। मिशन के सदस्य तथा श्रोताओं ने स्वामी जी के मुख से 'हनुमानाष्टक' की अद्भुत व सरस व्याख्या का आनंद लिया, महाराज ने हनुमान जी के व्यक्तित्व के दिव्य गुणों, उनकी अनन्य भक्ति तथा भगवान के काज के लिए सदैव तत्पर रहने वाले अलौकिक प्रेम के विषय में अद्भुत व्याख्यान प्रस्तुत किया। ये कक्षायें स्वामीजी के प्रति हृदय से आभार प्रकट किया तथा कक्षा की भूरि-भूरि प्रशंसा की। इसके बाद गुरुदक्षिणा का कार्यक्रम हुआ और महाराज जी ने सबको प्रसाद पुस्तिका प्रदान की। सत्संगी भाइयों ने बुक स्टाल पर जाकर अपने व अपने बच्चों के लिये अनेक ज्ञानवर्धक मिशन की पुस्तकें भी खरीदीं। आश्रम में समष्टि भिक्षा का आयोजन किया गया था, जिसमें सभी महात्माओं ने, ट्रस्ट के सदस्यों ने व भक्तों ने भाग लिया। श्री हनुमान जी के प्रति अनन्य भक्तिभाव से सम्पन्न होकर सभी भक्तों ने स्वामी जी का आशीर्वाद प्राप्त किया।

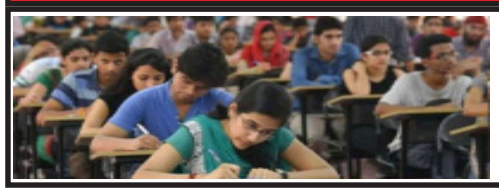

प्रदेश आस/पास

भारत

वाराणसी, रायबरेली

विश्व एड्स दिवस पर संगोष्ठी का आयोजन संपन्न

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

रायबरेली,। विश्व एड्स दिवस के क्रम में जिला महिला चिकित्सालय

रायबरेली में आज एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर जिला महिला चिकित्सालय रायबरेली की सी.एम.एस. डॉ. निर्मला कुमारी,एड्स एक जानलेवा बीमारी है, और इसके लिए लोगों को जागरूक करना अत्यंत आवश्यक है। एड्स एक संक्रमण रोग है और यह महामारी की तरह फैलता है। राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन (एनएसीओ) द्वारा जारी आंकड़ों का माने को भारत में एचआईवी/एड्स से पीड़ित लोगों की संख्या में बीते 10 वर्षों में भारी कमी आई है। यह लोगों में एचआईवी/एड्स को लेकर जागरूकता ही है, जिसके कारण इस घातक जानलेवा बीमारी को नियंत्रित किया जा सका है लोगों के बीच एचआईवी/एड्स महामारी को लेकर जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष 1 दिसंबर को विश्व एड्स दिवस मनाया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य एचआईवी/एड्स के प्रति जागरूकता बढ़ाना, इस बीमारी के प्रति समाज में फैली भ्रांतियों को दूर करना और एड्स पीड़ितों के प्रति सहानुभूति और समर्थन दिखाना है। चिकित्सालय मैनेजर मृणालिनी उपाध्याय ने कहा जानकारी ही इसका बचाव है डॉ. मीरा आनंद, डॉ. सुजाता त्रिपाठी, सिस्टर शशीबाला सिंह, सरोजनी तिवारी (मैट्रन), आई0सी0टी0सी0 काउन्सलर सीमा यादव, एल0टी0 प्रभात शर्मा एवं चिकित्सालय के मेडिकल एवं पैरामैडिकल स्टॉफ उपस्थित रहे। डॉ0 मीरा एवं काउन्सलर सीमा यादव द्वारा स्टॉफ को एच0 आई0 वी0 के बारे में जागरूक किया गया कि हम अपने आप को सुरक्षित रखते हुए कैसे एच0 आई0 वी0 से पीड़ित व्यक्तियों की देखभाल एवं इलाज कर सकते हैं एवं एच 0 आई0 वी0 गर्भवती महिलाओं से जन्में बच्चों को हम सही समय पर इलाज देकर एच.आई. की विमारी से बचा सकते हैं।

गोदौलिया से दशाश्वमेध तक होगा नो वेंडिंग जोन, जियो टैगिंग कराने का निर्णय

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

वाराणसी। गोदौलिया से दशाश्वमेध क्षेत्र में लगने वाले जाम को देखते हुए नगर निगम ने स्थानीय लोगों के साथ मिलकर यह निर्णय लिया है। इसके साथ ही यहां सड़कों पर वाहनों की पार्किंग नहीं होगी। अब फ्लाईओवर के नीचे स्ट्रीट फूड वेंडरों के लिए मॉडल स्ट्रीट फूड हब बनाया जाए। गोदौलिया से दशाश्वमेध क्षेत्र को नो वेंडिंग जोन घोषित किया जाएगा। यह निर्णय बुधवार को नगर निगम में हुई टाउन वेंडिंग कमेटी की बैठक में लिया गया। नगर आयुक्त अक्षत वर्मा ने फेरी पटरी वालों से कहा कि इस क्षेत्र में पर्यटकों की बढ़ती संख्या को देखते हुए यहां सड़क पर कोई कारोबार नहीं करेगा। साथ ही यहां सड़कों पर वाहनों की पार्किंग नहीं होगी। बैठक में यह भी तय हुआ कि पूर्व में जो वेंडिंग जोन निर्धारित थे। उनकी जियो टैगिंग कराई जाएगी। सर्वे के दौरान पटरी वालों को आईकार्ड, प्रमाणपत्र और बारकोड जारी किया जाएगा। वेंडिंग जोन में मूलभूत सुविधाएं विकसित की जाएंगी। पथ विक्रेता (जीविका सुरक्षा एवं पथ विक्रय विनियमन) अधिनियम, 2014 के तहत नवनिर्वाचित टाउन वेंडिंग कमेटी के सदस्यों ने समस्या रखी। नए वेंडिंग जोन के लिए सदस्यों से ही प्रस्ताव मांगें।

रोजगार मेले में 251 अभ्यर्थी चयनित

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

रायबरेली,। जिला सेवायोजन कार्यालय, रायबरेली के

तत्वाधान में दयानन्द पी0जी0 कॉलेज, बछरावां, रायबरेली में एक दिवसीय रोजगार मेले का आयोजन किया गया जिसमें शिवशक्ति बायोटेक्नॉलाजी लि0, बुसा मैनेजमेंट मार्केटिंग लि0, पीपल ट्री ऑनलाइन, ब्राइट फ्यूचर इण्डिया प्रा0 लि0 द्वारा विभिन्न पदों हेतु उपस्थित प्रतिभागियों का साक्षात्कार किया गया जिसमें से 251 प्रतिभागियों को प्राथमिक रूप से चयनित किया गया।रोजगार मेले का शुभारम्भ सुश्री तनूजा यादव, रोजगार मेला प्रभारी द्वारा किया गया एवं अभ्यर्थियों को रोजगार मेले के उद्देश्य एवं प्रासंगिकता एवं प्रतिभाग करने वाली कम्पनियों के पदों के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी दी गयी। विद्यालय के प्राचार्य डॉ0 सुभाष चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा जिला सेवायोजन कार्यालय, रायबरेली एवं कम्पनी के प्रतिनिधियों का धन्यवाद ज्ञापित किया गया। महाविद्यालय के डा0 अमित कुमार (रोजगार मेला प्रभारी), डा0 शिवकान्त शुक्ला, डा0 लवपाल सिंह, विजय कुमार, शिव प्रसाद, जितेन्द्र पाठक एवं जिला सेवायोजन कार्यालय, रायबरेली के जितेन्द्र सिंह कनौजिया, उमेश कुमार, विजय कुमार, रामेन्द्र कुमार पाण्डेय (वाई0पी0) द्वारा मेले के सफल आयोजन में सहयोग प्रदान किया गया।

19 देशों के एक लाख से ज्यादा अनुयायी देंगे आहुतियां, जगमगाने लगा स्वर्वेद महामंदिर

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

वाराणसी। विहंगम योग संत समाज के शताब्दी समारोह के लिए 25 हजार यज्ञ वेदियां बनकर तैयार हो चुकी हैं। 70 एकड़ भूखंड पर निर्मित यज्ञ क्षेत्र को 108 ब्लॉकों में

विभक्त किया गया है। सभी ब्लॉक भारतीय प्राचीन ऋषि-महर्षियों के नाम पर हैं। विहंगम योग के शताब्दी समारोह के लिए स्वर्वेद महामंदिर धाम जगमगा उठा है। उमरहां में 22 अस्थायी नगर सज-धजकर तैयार हो गए हैं। 25 हजार कुंडीय स्वर्वेद ज्ञान महायज्ञ में आहुति देने के लिए अमेरिका, कनाडा, नेपाल, स्विटजरलैंड, जर्मनी, फ्रांस, सिंगापुर, दुबई, दक्षिण अफ्रीका समेत 19 देशों के एक लाख से अधिक अनुयायी आहुतियां अर्पित करेंगे। स्वर्वेद महामंदिर का प्रांगण श्रद्धालुओं से गुलजार होने लगा है। देश-विदेश से विहंगम योग के अनुयायी महामंदिर धाम के नगर में पहुंचने लगे हैं। स्वर्वेद महामंदिर धाम में तैयारियों को संत प्रवर विज्ञानदेव महाराज के दिशा निर्देशन में अंतिम रूप दिया गया। दोपहर से ही उत्तर प्रदेश, बिहार, छत्तीसगढ़, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, बंगाल, आसाम, दिल्ली सहित कई राज्यों के अनुयायियों का जत्था महामंदिर धाम पहुंचने लगा है। विहंगम योग के शताब्दी समारोह में भाग लेने के लिए दूर-दूर से अनुयायियों का रेला हाथ में अ अंकित सफेद ध्वज लिए सद्गुरु के जयकारे लगाते महामंदिर धाम पहुंच रहे थे। स्वर्वेद महामंदिर धाम की आकर्षक सजावट पश्चिम बंगाल के विद्युत कारीगरों द्वारा की गई है। उमरहां से डुबकियां बाजार वाराणसी गाजीपुर हाईवे से लेकर अतिथि गृह, संत आवास, समेत बने नगरों को आधुनिक ढंग से सजाया गया है महायज्ञ के के लिए पथमेडा से भारतीय वेदलक्षणा गाय का शुद्ध बिलौना घी 11 टन, हिमालय के दुर्लभ जड़ी-बूटियों से निर्मित हवन सामग्री 150 टन और 250 टन यज्ञ समिधा के साथ ही साथ, कपूर, माचिस, धूपबत्ती, चम्मच, कटोरी, फल, मिष्ठान्न, सूखा मेवा, मधु, इत्र, नारियल मंगाया गया है। प्रत्येक यजमान को उनके निर्धारित कुंड पर सारी सामग्रियां पैकेट रूप में प्राप्त होंगी। हर कुंड पर प्रसाद के दो-दो पैकेट भी दिए जाएंगे। जिन्हें सभी यजमान अपने घर ले जाएंगे। यजमानों की सुविधाओं का ध्यान रखते हुए सभी ब्लॉक में कुंड पर आसन और वृद्ध तथा रोगी जनों के लिए कुर्सी के इंतजाम किए गए हैं। विहंगम योग के शताब्दी समारोह की शुरुआत छह दिसंबर को 'अ' अंकित सफेद ध्वजा फहराकर होगी। सद्गुरु आचार्य स्वतंत्र देव व संत प्रवर विज्ञानदेव महाराज की उपस्थिति में कार्यक्रम का शुभारंभ किया जाएगा। सात दिसंबर को 25 हजार कुंडीय स्वर्वेद महायज्ञ में बतौर मुख्य अतिथि सूबे के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और अन्य कई प्रमुख लोगों की उपस्थिति में प्रातः 8 बजे ध्वजारोहण के साथ झूंसी आश्रम व स्वर्वेद महामंदिर गुरुकुल के विद्वानों के वैदिक मंत्रोच्चार के साथ हजारों लोग स्वर्वेद महायज्ञ में अपनी आहुति देंगे। दोनों दिनों शाम चार बजे मंचीय कार्यक्रम के तहत विभिन्न राज्यों का लोक संगीत, भजन व आचार्य सद्गुरु की अमृतवाणी होगी।

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

रायबरेली,। प्राधिकरण के सेवा निवृत्त कार्यालय अधीक्षक श्री आशिक़ अली के द्वितीय पुत्र मोहम्मद आरिफ का निकाह कुमारी शरिया पुत्री मोहम्मद अनवर कानपुर के साथ संपन्न हुआ।इस अवसर पर जिले के गणमान्य नागरिक के साथ श्री देवनाथ पाल,राजेश पाण्डे, गुलाम हैदर, मोहम्मद सगीर , युवा नेता श्री अनुराग पांडेय,अमिताभ पांडेय, वरिष्ठ पत्रकार श्री शिव मनोहर पाण्डे आदि भारी संख्या में उपस्थित होकर आशीर्वाद प्रदान किया और सफ़ल वैवाहिक जीवन की कामना की।

एकाकार हुए भगवान राम और श्रीकृष्ण, भक्तों ने लगाए जयकारें; गूंज उठा पंडाल

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

वाराणसी। संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय में आयोजित सिय-पिय मिलन महोत्सव के दौरान भक्तों का जमावड़ा हो रहा है। भागवत वक्ता

देवकीनंदन ठाकुर की कथा सुन पूरा पंडाल श्रीराम और श्रीकृष्ण के जयकारों से गूंज उठा।संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय के दीक्षांत मैदान में भगवान राम और श्रीकृष्ण एकाकार नजर आए। एक तरफ ब्रज में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव तो दूसरी ओर मिथिला में माता सीता का धनुष यज्ञ। सिय-पिय मिलन महोत्सव के छठवें दिन पूरा प्रांगण हरे राम हरे कृष्ण...के साथ ही नंद के आनंद भयो जय कन्हैया लाल की... के जयकारे से गूंज उठा। भागवत वक्ता देवकीनंदन ठाकुर ने मंच से जैसे ही प्रभु के प्राकट्य का वर्णन किया, सभी भक्तों ने एक दूसरे को बधाई दी और नंद के आनंद भयो, जय कन्हैया लाल की..., ओ सांवरे सबसे बड़ो तेरो नाम रे..., ओ जियो श्याम लाला, नीली तेरी पगड़ी, रंग काला... आदि बधाई गीतों पर जमकर उत्सव मनाया। वहीं, दूसरी ओर सीताराम विवाह महोत्सव में छठे दिन फुलवारी एवं धनुष यज्ञ लीला का भावपूर्ण मंचन हुआ। प्रभु श्रीराम ने जैसे ही शिव का धनुष भंग किया, चहुंओर आनंद का वातावरण हो गया। इसके बाद श्रीसीताराम के जयमाल की लीला का भी मंचन हुआ। कथा श्रवण कराते हुए देवकीनंदन ठाकुर ने कहा कि सनातन धर्म में वचन निभाने की परंपरा रही है, चक्रवर्ती राजा हरिश्चंद्र ने सिर्फ अपने वचन की पूर्ति के लिए अपने संपूर्ण परिवार तक का त्याग कर दिया। उन्होंने कहा कि असली राजा वही है जो प्रजा के लिए स्वयं कष्ट उठाए। कथा के अंत में बक्सर से आए त्रिदंडी स्वामी गंगापुत्र महाराज, सिया दीदी, देवेंद्र पांडेय, अखिल भारतीय विद्वत परिषद के अध्यक्ष पंडित कामेश्वर उपाध्याय, अशोक अग्रवाल गुरुकृपा, दीपक बजाज, सुनील अग्रवाल, संचित जैन, गदू भइया, सुरेश तुलस्यान आरती में शामिल रहे।

ाइक सवार बदमाशों ने किया पंचमुखी पुजारी पर जानलेवा हमला

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
चुर्क सोनभद्र। चौकी क्षेत्र अंतर्गत सहिजन खुर्द स्थिति पंचमुखी

महादेव मंदिर के प्रधान पुजारी लक्ष्मण दुबे के उपर आज सुबह जब वह अपने घर से पंचमुखी मंदिर पर पूजा करने के लिए जा रहे थे रास्ते में पहले से घात लगाए बाइक सवार दो बदमाशों ने उनके ऊपर चाकू से जानलेवा हमला कर दिया प्रधान पुजारी लक्ष्मण दुबे अपनी जान बचाने के लिए उन बाइक सवार बदमाशों से लड़ गए बाइक सवार बदमाशों ने उनके गर्दन पर वार कर दिया वह जमीन पर गिर पड़े तथा चिल्लाने लगे तभी कुछ गांव वाले उनका हल्ला सुनकर दौड़ पड़े तथा भाग रहे बदमाशों को पकड़ कर पिटाई कर दिया गांव वालों ने बदमाशों को पकड़ कर पुलिस के हवाले कर दिया सूचना पर चौकी प्रभारी चुर्क सुनील कुमार अपने हमराहियों के साथ मौके पर पहुंच गए तथा अपने उच्च अधिकारियों को सूचना दिया तब तक पुजारी के परिजन भी वहां पहुंच गए तथा परिजन तत्काल पुजारी को जिला अस्पताल लोढ़ी ले गए जहां उनका इलाज चल रहा है वहीं पुलिस पब्लिक के पिटाई से घायल बदमाशों को भी अपनी कस्टडी में लेकर इलाज हेतु जिला अस्पताल लोढ़ी ले गई जहां उनका भी इलाज चल रहा है दोनों बदमाश श्यामसुंदर पाण्डेय उम्र लगभग 40 वर्ष तथा अभिषेक पाण्डेय उम्र लगभग 25 वर्ष निवासी कम्हारी बताए जा रहे हैं अभी तक प्रधान पुजारी को मारने का क्या मकसद था पता नहीं चल पाया है।

प्रधानमंत्री शहरी आवास में अनियमिकता को लेकर ग्रामीणों का प्रदर्शन

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। कलेक्ट्रेट परिसर में बुधवार को सहिजन खुर्द गांव निवासी ग्रामीणों ने प्रधानमंत्री शहरी लेखपाल द्वारा किया जा रहा है जिसमें पात्र व्यक्तियों को अपात्र बना दिया जा रहा है जिसको ध्यान में रखते हुए जिला अधिकारी का ध्यान

आवास के सर्वे में अनियमिकता को लेकर विरोध प्रदर्शन करते हुए सौपा ज्ञापन।ग्रामीणों ने बताया कि रावटसगंज नगर पालिका क्षेत्र के वार्ड नंबर 4 सहिजन खुर्द मोहाल रवासियों ने बताया कि प्रधानमंत्री शहरी आवास सर्वे का कार्य किस तरफ आकर्षित कराकर इसमें जांच करते हुए पात्र व्यक्तियों को आवास दिलाए जाने की गुहार लगाई इस मौके पर राकेश कुमार संत राजकुमार असलम मुनीर पंकज कुमार वीरेंद्र कुमार श्याम सुंदर छोटे लाल सहित आदि लोग मौजूद रहे।

जिलाधिकारी ने ईवीएम वेयर हाउस का किया निरीक्षण

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
रायबरेली,। जिलाधिकारी हर्षिता माथुर ने कलेक्ट्रेट परिसर में स्थापित ई0वी0एम0 वेयर हाउस का राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों निर्देशित किया गया कि सीसीटीवी कैमरों व साफ-सफाई की व्यवस्था के साथ-साथ सुरक्षा व्यवस्था भी चाक-चौबंद रखी जाए इसमें किसी प्रकार की शिथिलता/लापरवाही किसी

के साथ आंतरिक निरीक्षण कर व्यवस्थाएं देखी गई। निरीक्षण के दौरान जिलाधिकारी ने वहां साफ-सफाई, सुरक्षा तथा सीसीटीवी कैमरे आदि व्यवस्थाओं को चेक किया तथा ई.वी.एम, वी.वी. पैट व कंट्रोल यूनिट के रख-रखाव को देखा गया तथा सभी संबंधित अधिकारियों को के द्वारा न बरती जाये। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी अर्पित उपाध्याय, अपर जिला अधिकारी (प्रशासन) सिद्धार्थ, जिला पंचायत राज अधिकारी सौम्यशील सिंह सहित संबंधित अधिकारी व राजनीतिक दलों के प्रतिनिधिगण उपस्थित रहे।

जनपद स्तरीय ग्रामीण खेल प्रतियोगिता द्वितीय दिवस की सम्पन्न

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। उत्तर प्रदेश ग्रामीण खेल लीगठ के अन्तर्गत आयोजित जनपद स्तरीय ग्रामीण खेल प्रतियोगिता द्वितीय दिवस की सम्पन्न युवा कल्याण एवं प्रादेशिक विकास दल फुटबाल विघा में आयोजित की गयी, जिसमें जनपद के समस्त 10 विकास खण्डों से ब्लाक स्तरीय ग्रामीण खेल प्रतियोगिता के विजेता खिलाड़ियों द्वारा प्रतिभाग किया गया।दूसरे दिन की प्रतियोगिता के

विभाग, जनपद सोनभद्र के तत्वावधान में वित्तीय वर्ष 2024-25 में ठउत्तर प्रदेश ग्रामीण खेल लीगठ के अन्तर्गत 03, 04 व 05 दिसम्बर को विशिष्ट स्पोर्ट्स स्टेडियम, तियरा, राबर्ट्सगंज, सोनभद्र में आयोजित तीन दिवसीय जनपद स्तरीय ग्रामीण खेल प्रतियोगिता दूसरे दिन बुधवार को सकुशल सम्पन्न हुई। द्वितीय दिवस की खेल प्रतियोगिता सब जूनियर, जूनियर एवं सीनियर वर्ग में बालक/बालिकाओं की वालीबाल एवं विजेता खिलाड़ियों को शील्ड एवं प्रमाण-पत्र का वितरण शैलेन्द्र कुमार यादव, अपर जिला जज/सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, सोनभद्र द्वारा किया गया। इन्होने इस प्रतियोगिता के विजेता खिलाड़ियों को शुभकामनायें देते हुये कहा कि आप जोन तथा राज्य स्तर की प्रतियोगिता में विजेता बनकर इस जनपद का नाम रोशन करें तथा जो खिलाड़ी इस प्रतियोगिता में विजेता नहीं बन सके वे निरन्तर प्रयास कर भविष्य की प्रतियोगिताओं की तैयारी करे और विजयी बनें मेरी यही आप सभी के प्रति शुभकामनायें हैं। जिला युवा कल्याण अधिकारी द्वारा अवगत कराया गया कि इस जनपद स्तरीय ग्रामीण खेल प्रतियोगिता के प्रथम स्थानधारक खिलाड़ियों द्वारा वाराणसी में आयोजित होने वाली जोन स्तरीय प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया जाएगा। राजेश द्विवेदी सचिव जिला बैडमिण्टन संघ, सोनभद्र ने खिलाड़ियों का उत्साहवर्द्धन करते हुए कहा कि यह प्रतियोगिता जनपद के छिपी प्रतिभाओं को उचित मंच प्रदान करने हेतु बहुत ही कारगर साबित होगी आप सभी उच्च स्तर की प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग कर जनपद का गौरवबढ़ायें।तृतीय दिवस की प्रतियोगिता दिनांक 05 दिसम्बर, 2024 को सब जूनियर जूनियर एवं सीनियर वर्ग में बालक/बालिकाओं की भारोत्तोलन एवं जूडो विधा में आयोजित की जाएगी।इस मौके पर जिला क्रीड़ाधिकारी शमीम अहमद, सचिव जिला फुटबाल संघ नुरुद्दीन, सचिव जिला बैडमिण्टन संघ राजेश द्विवेदी, अमरेश चन्द्र पाठक, अमर सिंह, संजय सिंह युवा कल्याण विभाग के व्यायाम प्रशिक्षक प्रदीप कुमार सिंह, क्षेत्रीय युवा कल्याण अधिकारी अनुज त्रिपाठी, रवि शंकर कुशवाहा, धर्मेन्द्र कुमार सिंह, विकास दूबे, कनिष्ठ सहायक महफूज अली खान, जितेन्द्र कुमार, विजय कुमार विश्वकर्मा, भूपेन्द्र सिंह, प्रभुनारायण, विरेन्द्र राव, अवधेश सिंह सहित आदि लोग उपस्थित रहे।

कोटेदार संघ ने कलेक्टेट पर किया विरोध प्रदर्शन

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। उत्तर प्रदेश के उचित दर विक्रेताओं का खाधान एवं चीनी का लाभांश बढ़ाने व मांदेह की मांग को लेकर बुधवार को कलेक्ट्रेट में साथ हा काराना काल में भी उत्तर प्रदेश के कोटेदार प्रधानमंत्री अन्न योजना व राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत निःशुल्क वितरण किया गया। कोटेदार अपने

विरोध प्रदर्शन करते हुए मुख्यमंत्री नामित ज्ञापन जिलाधिकारी प्रतिनिधि को सौपा।संगठन अध्यक्ष विनोद कुमार ने बताया कि उत्तर प्रदेश के कोटेदार शासन के मन्यानमार राशन वितरण करत ह व अपने परिवार के जीवन की परवाह न करते हुये सरकार के दिशा निर्देशों में ई पाम मशीन में ईमानदारी के साथ वितरण किया, जिसकी मगहना पुर भाग्न में का गया आर उत्तर प्रदेश सरकार को भाग्न सरकार ने प्रशग्नि पत्र भी दिया गया। उ0प्र0 के कोटेदार सरकार के निर्देशानुसार वितगण करते हैं।उन्हों ने बताया कि परन्तु उ0प्र0 के कोटेदारों को लाभांश 18010 कुन्तल ही मिलता है. जबकि अन्य प्रदेशों में जैसे हरियाणा म0 200 प्रति कुन्तल, गोवा 250 200 केरल म0 200/-. गुजरात 80 20000/- मिनिमम इनकम गारंटी दिया जा रहा है। वही कि प्र0 के कोटेदारों को भी अन्य प्रदेशों की भांति लाभांश व मानदेय देने की कृपा करें, जिसमे इस महंगाई को देखने हुये कोटेदारों का भरण पोषण सुचारु रूप में हो सकें। अन्यथा की स्थिति में 25 फग्वग. ‘2025 को समग्न राशन विकेना जवाहर भवन लखनऊ का घेराव करेंगे और खाद्य आयुक्त महोदय को आपन भी देने का कार्य करेंगे, जिसकी यमग्न जिम्मेदारी शासन प्रशासन की भोगी।इस दौरान राजेश्वर अरविंद सुरेश राजू सुरेंद्र शिव भरत ,अजित सिंह सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

जनपद में डीएपी 3780 मी0 टन एवं एनपीके 1835 मी0 टन वितरण हेतु निजी व सहकारी बिक्री केन्द्रो एवं गोदामों पर उपलब्ध

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
रायबरेली,। जिला कृषि अधिकारी ने जनपद के कृषक बंधुओ से कहा है कि चालू रबी सीजन में 04 दिसम्बर 2024 तक जनपद में डीएपी टन कुल 30314 मी0 टन फास्फेटिक उर्वरकों की बिक्री हुई थी। इस प्रकार विगत रबी सीजन की अपेक्षा चालू रबी सीजन में एनपीके 2467 मी0टन की अधिक

3780 मी0 टन एवं एनपीके 1835 मी0 टन वितरण हेतु निजी व सहकारी विक्री केन्द्रो एवं गोदामों पर उपलब्ध है। चालू रबी सीजन में 1 अक्टूबर 2024 से 04 दिसम्बर 2024 तक डीएपी 20744 मी0 टन एवं एनपीके 9416 मी0 टन कुल 30160 मी0 टन फास्फेटिक उर्वरकों की विक्री हुई है। विगत वर्ष 1 अक्टूबर 2023 से लेकर 04 दिसम्बर 2023 तक डीएपी 23365 मी0 टन एवं एनपीके 6949 मी0 बिक्री हुई है जबकि डीएपी की 2621 मी0 टन कम बिक्री हुई है जिसका एक कारण फास्फेटिक के रूप में एनपीके की बिक्री विगत वर्ष से अधिक होना भी है। चालू रबी सीजन में जनपद में लगभग 80 फीसदी क्षेत्रफल में फसलों की बुआई हो चुकी है। इस समय रवी फसलों की बुवाई अपने अंतिम चरण में है जिस हेतु फास्फेटिक उर्वरक जिसमें डीएपी, एनपीके एवं सिंगल सुपर फास्फेट का प्रयोग किसान बंधुओ द्वारा किया जा रहा है की समुचित मात्रा उपलब्ध है। किसान भाई डीएपी के स्थान पर अन्य फास्फेटिक उर्वरक जैसे एनपीके, टीएसपी (ट्रिपल सुपर फास्फेट) एवं सिंगल सुपर फास्फेट का प्रयोग गेहूँ व अन्य फसलों की बुवाई के समय कर सकते हैं। विगत वर्षों की भांति उर्वरकों की आपूर्ति हो रही है। जनपद के रैक पॉइंट पर कल दिनांक 06 दिसम्बर को आर सी ?फ़ कम्पनी की आधी रैक डी ए पी एवं टी एस पी लगने की सम्भावना है, जिसमे प्राप्त होने वाली मात्राओं का प्रेषण निजी व सहकारी दोनों क्षेत्रों में कराया जायेगा। कतिपय समाचार पत्रों में फास्फेटिक उर्वरकों मुख्य रूप से डीएपी की कमी होने के सम्बन्ध में प्रकाशित खबरें आधारहीन हैं तथा समुचित रूप से सही नहीं है एवं वास्तविक स्थिति से अलग हैं। इसलिए किसान भाइयों से अनुरोध है कि किसी प्रकार की अफवाह पर ध्यान न दें तथा उर्वरकों का अग्रिम भंडारण ना करें। साथ ही जोत के अनुरूप बोई जाने वाली फसलों के दृष्टिगत संस्तुत मात्रा में ही उर्वरकों का क्रय करें। उर्वरक की आपूर्ति किसान बन्धुओं के उपयोग हेतु लगातार कराई जा रही है।

सांसद प्रियंका गांधी को संभल जाने से रोकना निदनीय:राघवेंद्र नारायण

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। लोकसभा में कांग्रेस प्रतिपक्ष के नेता राहुल गांधी और वायनाड से नव नियुक्त सांसद प्रियंका गांधी को आज संभल जाने से रोके जाने पर एनएसयूआई के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष राष्ट्रीय सचिव राघवेंद्र नारायण ने प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा की यह सीधे तौर पर लोकतंत्र पर हमला और उसकी हत्या है। संभल में जो लोग मारे गए हैं, पीड़ित परिवार से मिलने उनका दुख दर्द बांटने नेता प्रतिपक्ष को न जाने देना यह बताता है कि सरकार जरूर कुछ छुपाना चाहती है, संभल में जो पिछले दिनों हुआ वह पूरी तौर पर सरकार की नाकामी का नतीजा है । राघवेंद्र नारायण ने यह भी कहा कि विधान मंडल की नेता आराधना मिश्रा मोना सहित पश्चिमी उत्तर प्रदेश के तमाम कांग्रेस नेताओं को राहुल गाँधी के आगमन से पहले ही हाउस अरेस्ट कर लेना यह सीधे तौर पर बताता है कि सरकार कितनी डरी हुई है। जो सरकार और शासन नेता प्रतिपक्ष के वहां जाने पर कानून व्यवस्था का हवाला दे कर पल्ला झड़ लेता हो उसके राज में क़ानून व्यवस्था का आप अंदाजा लगा सकते हैं। राघवेंद्र नारायण ने यह भी कहा कि भाजपा मूल मुद्दों से ध्यान भटकाने के लिए ये कुचक्र रच रही है, लेकिन देश की जनता जर्नादन सब जानती है और आने वाले समय में इसका मुंहतोड़ जवाब देगी और भाजपा के दंभ और अहंकार को जरूर तोड़ेगी ।

वेतनमान को लेकर आपदा मित्र संगठन ने किया प्रदर्शन

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। उत्तर प्रदेश आपदा मित्र संगठन के ऐड़ाक पर नियुक्ति हुए कर्मचारीयो ने गुरुवार को कलेक्ट्रेट परिसर में अपनी 6 सूत्री मांग पत्र को लेकर विरोध प्रदर्शन करते हुए जिलाधिकारी प्रतिनिधि को दिया ज्ञापत।वहीं जिला अध्यक्ष मनीष सिंह ने बताया कि- हमारी मांगे इस प्रकार है- 1 - सरकार द्वारा घोषित 5 लाख का बीमा लागु करते हुवे इसकी राशि 20 लाख रुपये की जाये !2- सभी आपदा मित्रो एवं आपदा सखियों को केन्द्रीय कर्मचारी घोषित किया जाये !3 - स्वास्थ्य बीमा ई0 एस0 आई0 पी0 एफ0 रिटायरमेंट सहित अन्य सुविधाये देकर सामाजिक सुरक्षा की गारंटी करे सभी आपदा मित्रो / आपदा सखियों को न्यूनतम वेतन 26910 रु0 प्रतिमाह की गारंटी करे सरकार द्वारा स्वीकृत किये गए सभी आपदां कार्यालय आपदा मित्रो / आपदा सखियों को बहाल करते हुवे कार्यालय को संचालित किया जाये !6 - आपदा मित्रो / आपदा सखियों के लिए किए गये कार्य का अविलम्ब भुकतान किया जाए। इस दौरान राजेश सिंह,लनई प्रशाद, अवकाश, गुंजा,प्रेम प्रकाश, नीतू कुमारी, परमेश्वर, सोनी,राजेश कुमार सहित कई लोग मौजूद रहे।

अज्ञात वाहन के चपेट में आने से एक युवक की मौत दूसरा घायल

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। सदर कोतवाली क्षेत्र के रामपुर गांव निवासी बाइक सवार दो युवकों को अज्ञात वाहन ने मारा टकर एक युवक की हुई मौत दूसरा घायल वाराणसी रिफर।जानकारी के अनुसार मनीष कुमार उम्र 23 वर्ष पिता पारस निवासी रामपुर व उसी गांव निवासी धनराज उम्र 22 वर्ष पिता अर्जुन बाइक से दोनों लोग बरौरा की तरफ जा रहे थे कि बरौरा चट्टी पर बुधवार देर शाम सामने से आ रही अज्ञात वाहन के चपेट में आ गए गम्भीर देख आसपास के लोगों द्वारा आनन फानन में उपचार के लिए जिला अस्पताल भिजवाया गया जहां चिकित्सकों ने उपचार के दौरान मनीष कुमार 23 वर्ष को अमृत घोषित कर दिया वही धनराज 22 वर्ष की हालत गंभीर देखते हुए वाराणसी रिफर किया उधर मामले में पुलिस पीड़ितों से एप्लीकेशन लेकर अग्रिम कार्रवाई में जुटी।

क्षेत्रीय अध्यक्ष /सदर ब्लाक प्रमुख को दिल्ली विधानसभा चुनाव में बने प्रवासी

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)
सोनभद्र। भारतीय जनता पार्टी अनुसूचित जाति मोर्चा केंद्रीय नेतृत्व

द्वारा क्षेत्र अध्यक्ष और ब्लॉक प्रमुख अजीत रावत को विधानसभा चुनाव 2025 दिल्ली प्रदेश का विधानसभा प्रवासी बनाए जाने पर अनुसूचित जाति मोर्चा काशी क्षेत्र के पदाधिकारी में खुशी की लहर है बताते चलते हैं कि पूर्व में भारतीय जनता पार्टी अनुसूचित जाति मोर्चा उसके विभिन्न पदों पर के निर्वहन करते हुए रावत द्वारा संगठन के कार्यों को समर्पित भाव से निष्ठा से काम करते चले आ रहे हैं श्री रावत द्वारा पूर्व में अनुसूचित जाति मोर्चा के जिला संयोजक , पूर्व में अनुसूचित मोर्चा के जिला अध्यक्ष भारतीय जनता पार्टी जिले के मंत्री के रूप में तथा वर्तमान में क्षेत्रीय अध्यक्ष व ब्लाक प्रमुख का दायित्व का निर्माण कर रहे हैं साथ ही 2021 में कोरोना काल में जिला संयोजक के रूप में रहते हुए पूरे जिले में दवाइयां व राशन बांटने का काम कोरोना डिजिटल बुक प्रभारी के रूप में काम किया अनुसूचित जाति मोर्चा के राष्ट्रीय सम्मेलन के सहसंयोजक अनुसूचित मोर्चा सम्मेलन सोराव प्रयागराज के सहसयोजक के रूप में मंडल प्रवासी मंडल प्रभारी के रूप में काम किए हैं। अभी हाल में ही झारखंड प्रदेश के विधानसभा चुनाव 2024 में विधानसभा डाल्टनगंज के प्रवासी बनाए जाने पर भाजपा प्रत्याशी श्री आलोक चौरसिया को तीसरी बार चुनाव जीत कर विधानसभा पहुंचने का काम रावत ने किया अपनी जिम्मेदारियां को बखूबी निर्वहन करने के लिए श्री रावत पार्टी के लिए निष्ठा से काम करते चले आ रहे हैं सिर्फ नेतृत्व द्वारा श्री अजीत रावत द्वारा पार्टी का निष्ठा से कम को देखते हुए दिल्ली विधानसभा चुनाव 2025 के लिए विधानसभा प्रवासी बनाए जाने पर काशी क्षेत्र अनुसूचित मोर्चा में खुशी की लहर है कार्यकर्ताओं को बधाई दे रहे हैं अजीत रावत ने कहा निश्चित रूप से इस बार राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा साहब और देश के यशस्वी माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी अनुसूचित मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान लाल सिंह आर्य के नेतृत्व में दिल्ली में इस बार बीजेपी की सरकार बनेगी ।

स्पोर्ट्स

शतक के बावजूद यशस्वी जायसवाल को हुआ नुकसान, विराट कोहली को भी लगा झटका, बुमराह की बादशाहत बरकरार

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। विराट कोहली को भी झटका लगा है। अब वह एक स्थान के नुकसान के साथ 14वें पायदान पर पहंच गए हैं। टेस्ट गेंदबाजों की रैंकिंग में तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह की बादशाहत बरकरार है। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ शतकीय पारी के बावजूद यशस्वी जायसवाल को ताजा टेस्ट रैंकिंग में नुकसान हुआ है। उनके अलावा विराट कोहली को भी झटका लगा है। अब वह एक स्थान के नुकसान के साथ 14वें पायदान पर पहंच गए हैं। टेस्ट गेंदबाजों की रैंकिंग में तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह की बादशाहत बरकरार है। वह शीर्ष स्थान पर काबिज हैं। भारतीय टीम फिलहाल ऑस्ट्रेलिया दौरे पर है। पांच मैचों की टेस्ट सीरीज का पहला मुकाबला खेला जा चुका है। पर्थ में खेले गए इस मैच में टीम इंडिया ने 295 रनों से जीत दर्ज की। इस मुकाबले में शतकीय पारियां खेलने वाले यशस्वी जायसवाल और विराट कोहली को आईसीसी की ताजा रैंकिंग में नुकसान झेलना पड़ा है। 22 वर्षीय बल्लेबाज ने दूसरी पारी में 15 चौके और तीन छक्के की मदद से 161 रन की पारी खेली थी। वहीं, विराट कोहली ने 100ङ रन बनाए थे। टेस्ट बल्लेबाजों की रैंकिंग में जायसवाल 825 रेटिंग प्वॉइंट्स के साथ चौथे स्थान पर पहुंच गए। उन्हें दो स्थान का नुकसान हुआ है। अब उनकी जगह इंग्लैंड के हैरी ब्रूक दूसरे पायदान पर पहुंच गए हैं। वहीं, किंग कोहली 689 रेटिंग प्वॉइंट्स के साथ 14वें नंबर पर पहुंच गए। पर्थ टेस्ट में ऋषभ पंत का बल्ला कुछ खास नहीं चला। पहली पारी में उन्होंने 37 और दूसरी पारी में सिर्फ एक रन बनाया। हालांकि, इससे उनकी रैंकिंग पोजीशन में कोई खास प्रभाव नहीं पड़ा। वह 736 रेटिंग प्वॉइंट्स के साथ छठे पायदान पर काबिज हैं। शीर्ष पंत और जायसवाल ही दो भारतीय बल्लेबाज हैं। टेस्ट गेंदबाजों की रैंकिंग में भारत के तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह की बादशाहत बरकरार है। वह 883 रेटिंग प्वॉइंट्स के साथ शीर्ष पर बने हुए हैं। उनके अलावा शीर्ष 10 में रविचंद्रन अश्विन और रवींद्र जडेजा हैं। बुमराह ने ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ खेले गए पहले मैच में कुल आठ विकेट चटकाए थे। वहीं, अश्विन को इस मैच में आराम मिला था। वह चौथे पायदान पर बने हुए हैं। दिग्गज स्पिनर रवींद्र जडेजा को एक स्थान का लाभ हुआ है और वह छठे पायदान पर पहुंच गए हैं। उनके खाते में 794 अंक हैं।

भारत ने यूएई को 10 विकेट से रौंदा, छह दिसंबर को सेमीफाइनल में श्रीलंका से होगा सामना

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। इस जीत के साथ टीम इंडिया सेमीफाइनल में पहुंच गई है। छह दिसंबर को दोनों सेमीफाइनल मुकाबले खेले जाने हैं। अंतिम चार में भारत का सामना श्रीलंका से होगा। यह मैच शुक्रवार को भारतीय समयानुसार सुबह साढ़े 10 बजे से खेला जाएगा। अंडर-19 एशिया कप में बुधवार को शारजाह में भारत का सामना यूएई से हुआ। इस मैच को टीम इंडिया ने 10 विकेट से अपने नाम किया। जीत के लिए मिले 138 रन के लक्ष्य को भारत ने 16.1 ओवर में बिना कोई विकेट गंवाए हासिल कर लिया। 13 साल के वैभव सूर्यवंशी ने 46 गेंद में 76 रन की ताबड़तोड़ पारी खेली। इसके अलावा आयुष म्हात्रे ने 51 गेंद में 67 रन बनाए। इस जीत के साथ टीम इंडिया सेमीफाइनल में पहुंच गई

सेमीफाइनल मुकाबले खेले जाने हैं। अंतिम चार में भारत का सामना श्रीलंका से होगा। यह मैच शुक्रवार को भारतीय समयानुसार सुबह साढ़े 10 बजे से खेला जाएगा। भारतीय टीम ग्रुप ए में फिलहाल शीर्ष स्थान पर है। उसके तीन मैचों में चार अंक हैं और उसका नेट रन रेट द्द2.558 है। वहीं, पाकिस्तान की टीम दो मैचों में दो जीत के साथ दूसरे स्थान पर है। उसका आखिरी मैच जापान से है। ग्रुप बी से श्रीलंका और बांग्लादेश की टीम क्वालिफाई कर चुकी है। ग्रुप ए से क्वालिफाई करने वाली दूसरी टीम बांग्लादेश से दुबई में भिड़ेगी। फाइनल आठ दिसंबर को दुबई अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम में खेला जाएगा। पहले बल्लेबाजी करते हुए यूएई की टीम 44 ओवर में 137 रन पर सिमट गई थी। आर्यन सक्सेना नौ रन और अक्षत राय 26 रन बनाकर पवेलियन लौटे थे। याइन राय खाता नहीं खोल सके थे। डीसूजा 17 रन, कप्तान मैच शुक्रवार को भारतीय समयानुसार सुबह साढ़े 10 बजे से खेला जाएगा। भारतीय टीम ग्रुप ए में फिलहाल शीर्ष स्थान पर है। उसके तीन मैचों में चार अंक हैं और उसका नेट रन रेट द्द2.558 है। वहीं, पाकिस्तान की टीम दो मैचों में दो जीत के साथ दूसरे स्थान पर है। उसका आखिरी मैच जापान से है। ग्रुप बी से श्रीलंका और बांग्लादेश की टीम क्वालिफाई कर चुकी है। ग्रुप ए से क्वालिफाई करने वाली दूसरी टीम बांग्लादेश से दुबई में भिड़ेगी। फाइनल आठ दिसंबर को दुबई अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम में खेला जाएगा। पहले बल्लेबाजी करते हुए यूएई की टीम 44 ओवर में 137 रन पर सिमट गई थी। अयान खान पांच रन और उदिश सूरी 16 रन बनाकर आउट हुए थे। नूरुल्लाह अयोबी नौ रन, मुदित अग्रवाल चार रन और अली असगर शम्स दो रन बनाकर पवेलियन लौटे। टीम के लिए रायन खान ने सबसे ज्यादा 35 रन बनाए। भारत की ओर से युद्धाजीत गुहा ने सबसे ज्यादा तीन विकेट लिए। वहीं, चेतन शर्मा और हार्दिक राज को दो-दो विकेट मिले। केपी कार्तिकेय और आयुष म्हात्रे को एक-एक विकेट मिला। जवाब में भारत के लिए आयुष ने 51 गेद में चार चौके और चार छक्कों की मदद से 67 रन और वैभव सूर्यवंशी ने 46 गेंद में तीन चौके और छह छक्कों की मदद से 76 रन की नाबाद पारी खेली।

मैं 10 साल पहले ऐसा ही था', यशस्वी में खुद की छवि देखते हैं केएल राहुल, याद किए पुराने दिन

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। राहुल और जायसवाल ने पर्थ में पहले टेस्ट की दूसरी पारी में पारी का आगाज करते हुए 201 रन की साझेदारी की थी जो भारतीय रिकॉर्ड है। जायसवाल ने पर्थ में शतक जड़ा था जबकि राहुल ने 77 रन बनाए थे। भारतीय टीम के अनुभवी विकेटकीपर बल्लेबाज केएल राहुल में 22 वर्षीय यशस्वी जायसवाल में अपनी झलक दिखती है। उन्हें युवा बल्लेबाज उसी स्थिति में नजर आ रहे हैं जैसे वह 10 वर्ष पूर्व अपने शुरुआती ऑस्ट्रेलिया दौरे पर थे। राहुल ने 2014-15 की सीरीज में मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड (एमसीजी) पर डेब्यू करते हुए छठे नंबर पर बल्लेबाजी की थी और तीन तथा एक रन की पारी खेली थी। उन्होंने हालांकि अगले ही मैच में सलामी बल्लेबाज के रूप में जोरदार वापसी करते हुए सिडनी में 110 रन बनाकर सभी का ध्यान खींचा था। सिडनी में दूसरी पारी में राहुल नर्वस दिखे थे जहां उन्होंने मुरली विजय के साथ एक घंटा बल्लेबाजी करते हुए 16 रन बनाए थे। राहुल जायसवाल के साथ वही भूमिका निभाने की कोशिश कर रहे हैं जो पूर्व सलामी बल्लेबाज और राष्ट्रीय टीम के सीनियर साथी विजय ने उनके साथ निभाई थी। राहुल और जायसवाल ने पर्थ में पहले टेस्ट की दूसरी पारी में पारी का आगाज करते हुए 201 रन की साझेदारी की थी जो भारतीय रिकॉर्ड है। जायसवाल ने पर्थ में शतक जड़ा था जबकि राहुल ने 77 रन बनाए थे। जायसवाल के साथ अपनी बातचीत के बारे में पूछे जाने पर राहुल ने कहा, मैंने उसमें खुद को देखा, जैसा कि मैं 10 साल पहले था। पहली बार पारी का आगाज कर रहा था, बहुत सारे संदेह, बहुत सारी घबराहट और आप अपने खेल पर संदेह करते रहते हैं और आपके दिमाग में बहुत कुछ चलता रहता है और इसलिए आप बस इतना कर सकते हैं कि चीजों को धीमा करने की कोशिश करें, कुछ गहरी सांसें लेने की कोशिश करें। इसके अलावा राहुल ने सिडनी में अपने टेस्ट शतक को याद करते हुए कहा, यही बात मेरे साथी सलामी जोड़ीदार (मुरली विजय) ने मुझे कही थी, मैंने बस उसे यही बताया।

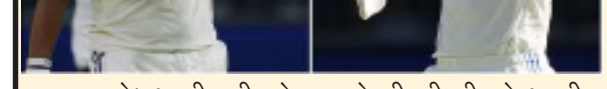

अनुष्का शर्मा ने बताया कोहली की फिटनेस का राज, एडिलेड टेस्ट से पहले किया खुलासा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। पिंक बॉल टेस्ट से पहले सोशल मीडिया पर एक वीडियो वायरल हो रहा है जिसमें अनुष्का कोहली के स्वास्थ्य और लाइफस्टाइल से जुड़ी बातें बता रही हैं। भारतीय बल्लेबाज विराट कोहली की गिनती दुनिया के फिट क्रिकेटरों में होती हैं। उन्होंने हाल ही में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पहले टेस्ट मैच में लाल गेंद के प्रारूप का अपना 30वां शतक लगाया था और अब वह शुक्रवार से होने वाले एडिलेड टेस्ट की तैयारियां कर रहे हैं। इस मैच से पहले ही बॉलीवुड अभिनेत्री और कोहली की पत्नी अनुष्का शर्मा ने इस स्टार बल्लेबाज की फिटनेस का राज बताया है। प्रशंसकों को 36 वर्षीय इस बल्लेबाज से शानदार बल्लेबाजी की उम्मीद है, लेकिन अनुष्का ने इसका खुलासा किया है कि कोहली की फिटनेस का राज क्या है। पिंक बॉल टेस्ट से पहले सोशल मीडिया पर एक वीडियो वायरल हो रहा है जिसमें अनुष्का कोहली के स्वास्थ्य और लाइफस्टाइल से जुड़ी बातें बता रही हैं। अनुष्का ने कहा, ईमानदारी से एक बात बताना चाहती हूं कि कोहली अपने स्वास्थ्य और फिटनेस को लेकर काफी अनुशासित रहते हैं। मुझे लगता है कि यह हमारी इंडस्ट्री में भी अब हो रहा है।

जय शाह के आईसीसी प्रमुख बनने के बाद कौन संभालेगा बीसीसीआई की जिम्मेदारी

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। बीसीसीआई में शाह की जगह लेने की दौड़ में गुजरात के अनिल पटेल और बोर्ड के मौजूदा संयुक्त सचिव देवजीत सैकिया का नाम आगे है। डीडीसीए अध्यक्ष रोहन जेटली का नाम भी सामने आया, लेकिन यह सिर्फ अटकलें ही रहीं। जय शाह के एक दिसंबर को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) के सबसे युवा अध्यक्ष के रूप में कार्यभार संभालने के साथ भारतीय क्रिवेकट बोर्ड (बीसीसीआई) में सचिव का पद खाली हो गया और बोर्ड से जुड़े राज्य संघों के अलावा अधिकारियों को भी अब तक यह पता नहीं है कि उनकी जगह कौन लेगा। विश्व के सबसे ताकतवर क्रिकेट बोर्ड में 2022 में हुए संवैधानिक संशोधन के बाद से इसके सचिव सबसे प्रभावशाली पदाधिकारी हैं। बीसीसीआई सचिव के पास क्रिकेट और गैर-क्रिकेट मामलों से संबंधित सभी शक्तियां हैं और सीईओ (मुख्य कार्यकारी अधिकारी) उसकी देखरेख में काम करता है। शाह को अगस्त में आईसीसी के शीर्ष पद के लिए निर्विरोध चुना गया था और तब से बीसीसीआई के हितधारक बोर्ड में होने वाले बदलाव के बारे में सोच रहे हैं। बीसीसीआई में शाह की जगह लेने की दौड़ में गुजरात के अनिल पटेल और बोर्ड के मौजूदा संयुक्त सचिव देवजीत सैकिया का नाम आगे है। डीडीसीए अध्यक्ष रोहन जेटली का नाम भी सामने आया, लेकिन यह सिर्फ अटकलें ही रहीं। बीसीसीआई के एक प्रशासक ने कहा, हमें नहीं पता कि क्या हो रहा है। हर कोई (बीसीसीआई के अधिकारी और राज्य इकाइयां) इस मामले पर चुप हैं। सबसे अधिक संभावना है कि संयुक्त सचिव (सैकिया) फिलहाल अंतरिम होंगे। उन्होंने कहा, ऐसे मुद्दे हैं, जिनसे रोजाना निपटना पड़ता है और जो कोई भी आता है, उसे बीसीसीआई के संचालन के बारे में थोड़ी जानकारी होनी चाहिए। निर्वाचित पदाधिकारी के इस्तीफा देने के बाद से बोर्ड के पास विशेष आम बैठक (एजीएम) बुलाने और उसके उत्तराधिकारी का चयन करने के लिए 45 दिन का समय होता है। अगर शाह के आईसीसी का कार्यभार संभालने के दिन से 45 दिनों की गणना की जाए तो बोर्ड के पास पद भरने के लिए जनवरी के मध्य तक का समय है। संविधान के अनुसार बीसीसीआई को चुनाव से कम से कम चार सप्ताह पहले एक निर्वाचन अधिकारी की नियुक्ति भी करनी होती है।राज्य इकाई के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि बोर्ड के पास बदलाव को पूरा करने के लिए पर्याप्त समय है। इस अधिकारी ने कहा, अब तक इस मामले का निपटारा पूरा हो जाना चाहिए था। सचिव को अधिकांश दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने होते हैं। इस मामले को एजीएम (सितंबर में) में उठाया जाना चाहिए था, लेकिन उस समय किसी ने सवाल नहीं उठाया।

सारा तेंदुलकर को मिली बड़ी जिम्मेदारी, पिता का इस काम में बटाएंगी हाथ; सचिन ने खुद की घोषणा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। उन्होंने अपने एक्स हैंडल से बताया कि सारा अब उनके फाउंडेशन की नई निदेशक हैं और असहाय बच्चों की मदद के लिए काम करेंगी। सचिन ने लिखा- मुझे यह बताते हुए बेहद खुशी हो रही है कि मेरी बेटी सारा तेंदुलकर 'सचिन तेंदुलकर फाउंडेशन' में निदेशक के रूप में शामिल हो गई हैं। उन्होंने यूनिवर्सिटी कॉलेज लंदन से क्लिनिकल और पब्लिक हेल्थ न्यूट्रिशन में मास्टर डिग्री हासिल की है। जब वह खेल, स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा के माध्यम से भारत को सशक्त बनाने की इस यात्रा पर निकल पड़ीं, तो यह इस बात की याद दिलाता है कि ग्लोबल लर्निंग कैसे हर किसी को मिल सकती है।

राशि फल

कुछ कार्य जिसकी पिछले कुछ दिनों से प्लानिंग चल रही है, आज शुरू हो सकता है, जिससे आपको आर्थिक स्थिति में लाभ होगा। व्यापार-व्यवसाय में परिवर्तन की योग बन रहे है	आज का दिन अच्छा है। परिवार में कोई नया सदस्य आ सकता है। आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव देखने को मिलेगा। व्यापार आदि में सहयोगी पार्टनर के माध्यम से आय के नए स्रोत बनेंगे	किसी कार्य विशेष को लेकर आज यात्रा आदि पर बाहर जा सकते हैं। यात्रा में सावधानी बरतें, नहीं तो आपको नुकसान हो सकता है। साथ ही परिवार में किसी अपने के स्वास्थ्य से आप चिंतित रह सकते हैं।	आज आप व्यर्थ की भागदौड़ से परेशान हो सकते हैं। आपका मन अशांत रहेगा। कार्य की अधिकता के कारण थकावट आदि महसूस होगी।
आज आप मानसिक रूप से उलझे रहेंगे। किसी बात को लेकर परिवार में परेशानी बढ़ सकती है, लेकिन आप अपनी कुशलता से उसे हल करने में सफल होंगे। स्वास्थ्य ठीक रहेगा।	नौकरी आदि के लिए यदि प्रयास कर रहे है तो, आज आपको सफलता मिलेगी। स्वास्थ्य आपका ठीक रहेगा, परंतु परिवार में माता-पिता का स्वास्थ्य बिगड़ सकता है।	आज आपका कोई महत्वपूर्ण कार्य न होने से आप मानसिक तौर से परेशान रह सकते है। आर्थिक स्थिति के कारण आपको किसी से मदद मांगनी पड़ सकती है। व्यापार-व्यवसाय में भी इस समय गिरावट महसूस होगी।	आज आप पतनी के स्वास्थ्य को लेकर कुछ परेशान रहेंगे। परिवार के लोग सहयोग करेंगे। व्यापार-व्यवसाय में अपने साथियों के विरोध के कारण आपको बड़ा नुकसान हो सकता है।
स्वास्थ्य को लेकर आप परेशान हो सकते हैं। साथ ही नौकरी आदि में अधिकारी वर्ग से मतभेद बढ़ने से आपकी परेशानी बढ़ेगी।	आज का दिन आपके लिए लाभदायक रहेगा। किसी अपने के द्वारा आपको कार्यक्षेत्र में बड़ा काम मिल सकता है, जिस कारण मन प्रसनन रहेगा।	आत्मविश्वास में कमी रहेगी। मानसिंक शांति रहेगी लेकिन असंतोष भी रहेगा। परिवार में शांति बनी रहेगी। पिता का सहयोग मिलेगा।	मान-सम्मान बढ़ेगा। नौकरी में पदोन्नति के योग हैं। आत्मविश्वास बन रहेगा। शिक्षा से जुड़े काम सफल होंगे।

रोहित शर्मा को अपने बल्लेबाजी स्थान में करना चाहिए परिवर्तन रवि शास्त्री ने टीम संयोजन पर रखी राय

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। दूसरे टेस्ट से पहले ऑस्ट्रेलिया प्रधानमंत्री एकादश के खिलाफ हुए अभ्यास मैच में भी यशस्वी और राहुल ने पारी का आगाज किया था और अर्धशतकीय साझेदारी की थी। अभ्यास मैच में रोहित चौथे नंबर पर उतरे थे भारतीय टीम के पूर्व मुख्य कोच रवि शास्त्री ने इस बारे में राय रखी है कि कप्तान रोहित शर्मा को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ एडिलेड टेस्ट में अपने बल्लेबाजी स्थान में परिवर्तन करना चाहिए या नहीं। रोहित अपने दूसरे बच्चे के जन्म के कारण पहले टेस्ट के लिए उपलब्ध नहीं थे और वह दूसरे टेस्ट से पहले टीम से जुड़ गए थे। रोहित की अनुपस्थिति में यशस्वी जायसवाल के साथ केएल राहुल ने ओपनिंग की थी और रोहित की वापसी के बाद यह सवाल उठ रहे हैं कि दूसरे टेस्ट में पारी का आगाज करने कौन जाएगा?राहुल ने यशस्वी के साथ भारत को मजबूत शुरुआत दिलाई थी और पहले टेस्ट मैच की दूसरी पारी में पहले विकेट के लिए 200द रन की साझेदारी की थी। राहुल ने इस दौरान 77 रन बनाए थे। दूसरे टेस्ट से पहले ऑस्ट्रेलिया प्रधानमंत्री एकादश के खिलाफ हुए अभ्यास मैच में भी यशस्वी और राहुल ने पारी का आगाज किया था और अर्धशतकीय साझेदारी की थी। रोहित शर्मा को अपने बल्लेबाजी स्थान में करना चाहिए परिवर्तन रवि शास्त्री ने टीम संयोजन पर रखी राय

महिला टीम के सामने ऑस्ट्रेलियाई धरती पर जीत दर्ज करने की चुनौती

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। हरमनप्रीत कौर की अगुआई वाली भारतीय टीम की नजरें ऑस्ट्रेलिया में अपना रिकॉर्ड सही करके अगले साल होने वाले वनडे विश्वकप की तैयारियों का आगाज करने पर होंगी। ब्रिसबेन में मौसम गर्म और उमसभरा रहने की उम्मीद है और बारिश की भी संभावना है। भारत और ऑस्ट्रेलिया की पुरुष टीमों के बीच बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी को लेकर बनी हाइप के बीच दोनों देशों की महिला क्रिकेट टीमें गुरुवार से एलेन बॉर्डर फील्ड पर तीन मैचों की वनडे सीरीज खेलेंगी। हरमनप्रीत कौर की अगुआई वाली भारतीय टीम की नजरें ऑस्ट्रेलिया में अपना रिकॉर्ड सही करके अगले साल होने वाले वनडे विश्वकप की तैयारियों का आगाज करने पर होंगी। ब्रिसबेन में मौसम गर्म और उमसभरा रहने की उम्मीद है और बारिश की भी संभावना है। मैच अब से कुछ ही समय बाद भारतीय समयानुसार सुबह 9:50 बजे से खेला जाएगा। भारतीय टीम न्यूजीलैंड के खिलाफ घरेलू वनडे सीरीज को 2-1 से जीतकर ऑस्ट्रेलिया पहुंची है। टीम को 2021 के पिछले दौरे पर 1-2 से हार का सामना करना पड़ा था। वहीं, पिछले करीब नौ महीने से इस प्रारूप में नहीं खेली ऑस्ट्रेलिया की नजरें अगले साल भारत में होने वाले वनडे विश्वकप से पहले खुद को आजमाने पर लगी होंगी। भारत की उम्मीदों का दारोमदार अनुभवी सलामी बल्लेबाज स्मृति मंधाना पर रहेगा जिन्होंने पिछले महीने न्यूजीलैंड के खिलाफ निर्णायक वनडे में शतक लगाकर भारत को जीत दिलाई।

सम्पादकीय

कब रुकेंगी मानवता को शर्मसार करने वाली घटनाएं

एक समय ऐसा भी था, जब यूरोप द्वारा भारत को जादू-टोने का देश तक बता दिया जाता था, लेकिन पिछले सात दशक में हमने न केवल तरक्की की ऊंचाइयों को छुआ है, बल्कि इनफॉरमेशन टेक्नोलॉजी (आईटी) जैसे क्षेत्रों में दुनिया को राह दिखा रहे हैं। भोपा या जादू-टोना करने वाले केवल पिछड़े या ग्रामीण इलाकों तक सीमित नहीं हैं। इनकी जड़ें दिल्ली समेत अधिकांश शहरों में जमी हुई हैं। यह घटना आपको भीतर तक झकझोर देगी... राजस्थान के बूंदी जिले के हिंडोली क्षेत्र में एक महिला को डायन बताकर न केवल गर्म सलाखों से दागा गया, बल्कि बाल तक काट दिए गए। मुंह काला कर गांव में घुमाया गया और पेड़ से बांध दिया गया। मल-मूत्र तक खिला दिया गया। यह सब महिला की बीमारी ठीक करने का बहाना बनाकर किया गया। विडंबना यह है कि आज भी देश के अलग-अलग इलाकों में ऐसी घटनाएं होती रहती हैं। भले भारत की साक्षरता दर 74 प्रतिशत से अधिक हो गई हो, लेकिन बड़ी संख्या में लोग ऐसे जादू-टोना करने वालों के चंगुल में फंसते रहते हैं। एक समय ऐसा भी था, जब यूरोप द्वारा भारत को जादू-टोने का देश तक बता दिया जाता था, लेकिन पिछले सात दशक में हमने न केवल तरक्की की ऊंचाइयों को छुआ है, बल्कि इनफॉरमेशन टेक्नोलॉजी (आईटी) जैसे क्षेत्रों में दुनिया को राह दिखा रहे हैं। हमारे इंजीनियर अमेरिका की सिलिकॉन वैली पर राज कर रहे हैं। आज दुनिया में उपलब्ध हर आधुनिक वस्तु भारत में आसानी से मिल जाती है। कई देशों के लोग भारत में इलाज कराने आते हैं, क्योंकि हमारे यहां अच्छे डॉक्टर हैं और हमारी मेडिकल साइंस ने खूब तरक्की की है। फिर भी कुछ लोग भोपा या जादू-टोना करने वालों के फेर में आ रहे हैं। या तो उन्हें उचित इलाज नहीं मिल रहा होता या वो सही जगह पहुंच नहीं पाते हैं। जब कोई व्यक्ति निराशा होता है तो ऐसे फर्जी लोगों का निशाना बन जाता है, जैसा बूंदी जिले के हिंडोली की महिला के साथ हुआ। महिला को मात्र पेट में दर्द था और वो ठीक नहीं हो रहा था। कमाल की बात यह है कि भोपा महिला को प्रताड़ित करता रहा और किसी ने विरोध तक नहीं किया। हालांकि, अब महिला के परिजनों ने भोपा और उसके सहयोगियों के खिलाफ पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है। भोपा गैंग के साथ फरार हो गया है। भोपा या जादू-टोना करने वाले केवल पिछड़े या ग्रामीण इलाकों तक सीमित नहीं हैं। इनकी जड़ें दिल्ली समेत अधिकांश शहरों में जमी हुई हैं। बड़े-बड़े शहरों के चौराहों पर अक्सर आपको ऐसे कार्ड बांटने वाले मिल जाएंगे, जो वशीकरण, मनचाहा प्यार, गृह क्लेश, जादू-टोना, पति-पत्नी में अनबन, सौतन व दुश्मन से छुटकारा, जटिल से जटिल समस्याओं का समाधान करने का दावा करते हैं। जब कोई व्यक्ति चारों ओर से निराश होता है तो इन जादू-टोटका करने वालों के फेर में आ जाता है। बस यही पर किसी भी व्यक्ति के धैर्य और सोच-समझ की परीक्षा होती है।हमें ये समझना चाहिए कि यदि कोई बीमार है या जीवन में परेशानी है तो उसका इलाज डॉक्टर या वैद्य के पास मिलेगा। कई बार हम डॉक्टर से इलाज कराते-कराते उस स्थिति में इलाज को छोड़ देते हैं, जब बीमारी ठीक होने वाली होती है। फिर जादू टोटका करने वालों के फेर में आ जाते हैं और दो-चार लोगों को राहत मिलती है तो वो इनका मुफ्त में प्रचार करने लग जाते हैं। ऐसे फर्जी लोग केवल अपने ठिकाने बनाकर नहीं बैठे हैं, बल्कि बाकायदा खुले मंच सजाकर भी बीमारियां ठीक करने का स्वांग रचते हैं। ऐसे सैकड़ों वीडियो सोशल मीडिया पर देखे जा सकते हैं। डायन प्रथा को लेकर कोई केंद्रीय कानून तो नहीं है, लेकिन राज्यों में अपने-अपने यहां कानून बना रखे हैं। राजस्थान डायन प्रताड़ना निवारण अधिनियम 2015 और राजस्थान डायन प्रताड़ना निवारण नियम 2016 के तहत किसी महिला को डायन घोषित कर बदनाम या प्रताड़ित कर नुकसान पहुंचाने पर अपराधी को 1 से 5 साल तक कठोर कारावास या 50,000 रुपए का जुर्माना अथवा दोनों हो सकते हैं। अगर कोई व्यक्ति झाड़-फूंक, तंत्र-मंत्र, जादू-टोटका कर किसी व्यक्ति को नुकसान या चोट पहुंचाता है तो उसे 1 से 3 साल तक का कारावास या 10,000 रुपए का जुर्माना अथवा दोनों दंड दिए जा सकते हैं। वैसे तो शासन-प्रशासन डायन प्रथा को लेकर समय-समय पर जन-जागरूकता के कार्यक्रम चलता है, लेकिन सोशल मीडिया पर खुलेआम फर्जी दावे कर रहे तत्वों पर लगाम नहीं लगाई जा सकी है। सरकारी बसों में ऐसे स्टिकर लगे मिल जाते हैं, जो वशीकरण, बीमारियों का शर्तिया इलाज आदि का दावा करते हैं।

किसानो को बार-बार दिल्ली कूच क्यों करना पड़ता है

सरकार और किसानों के बीच लगातार खाई बढ़ती जा रही है। उपराष्ट्रपति ने भी किसानों की समस्या पर चिंता जताई है। ऐसे में सवाल ये है कि आखिर किसानों को बार-बार दिल्ली क्यों कूच करना पड़ता है? आइए इस लेख में विस्तार से जानते हैं किसान संगठन अपनी मांगों को लेकर तीसरी बार देश की राजधानी दिल्ली की ओर कूच कर रहे हैं। हालांकि दिल्ली कूच के पहले ही आंदोलनकारी किसान संगठनों में फूट पड़ गई है। उधर केन्द्र व भाजपाशासित राज्य सरकारें किसान आंदोलन को राजनीति से प्रेरित मानकर खारिज करती रही हैं तो किसानों का मानना है कि सरकार उनकी मांगों को मानना ही नहीं चाहती। देश की राजधानी में तीसरी बार हो रहे, इस किसान आंदोलन के औचित्य को लेकर पहले भी कई सवाल उठते रहे हैं, लेकिन हाल में देश के उपराष्ट्रपति जगदीप धनकड़ ने एक सार्वजनिक कार्यक्रम में केन्द्रीय कृषि मंत्री से जवाब तलब कर नई सनसनी फैला दी कि किसानों की मांगों को लेकर आखिर सरकार कर क्या रही है?मुंबई में केंद्रीय कपास प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान के शताब्दी समारोह में उपराष्ट्रपति ने कहा कि किसान संकट में है और आंदोलन कर रहे हैं। यह स्थिति देश के लिए अच्छी नहीं है। सरकार को आत्मावलोकन की जरूरत है। क्या किसानों से कोई वादा किया गया था? क्या वह पूरा नहीं हुआ? इसी कार्यक्रम में केन्द्रीय कृषि मंत्री शिवराजसिंह चौहान भी मौजूद थे।

किसान आंदोलन के पीछे कौन से तत्व हैं, इसे समझने के साथ साथ इस बात का विश्लेषण भी जरूरी है कि किसान जो मांगे लगातार करते आ रहे हैं, उनका स्थायी समाधानकारक हल क्यों नहीं होता और यह भी क्या इस तरह तकरीबन हर साल किसानों का आंदोलन करना सुनियोजित एजेंडे का हिस्सा बन चुका है देश में किसान आंदोलन की शुरुआत 2020 में कोरोना प्रकोप के दौरान ही मोदी सरकार द्वारा लागू तीन कृषि कानूनों के विरोध में हुई थी। यह देश में अब तक का सबसे लंबा चला आंदोलन था। नतीजा यह हुआ कि मोदी सरकार को कृषि कानून वापस लेने पड़े। हालांकि सरकार का एक कदम पीछे खींचना राजनीतिक दृष्टि से भाजपा के लिए फायदेमंद ही साबित हुआ, क्योंकि इसने कृषि कानून विरोधी आंदोलन की धार को ही कुंद कर दिया। लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं था कि किसानों की सारी समस्याओं का समाधान हो गया है।देश में किसान आंदोलन की शुरुआत 2020 में कोरोना प्रकोप के दौरान ही मोदी सरकार द्वारा लागू तीन कृषि कानूनों के विरोध में हुई थी। यह देश में अब तक का सबसे लंबा चला आंदोलन था। नतीजा यह हुआ कि मोदी सरकार को कृषि कानून वापस लेने पड़े। हालांकि सरकार का एक कदम पीछे खींचना राजनीतिक दृष्टि से भाजपा के लिए फायदेमंद ही साबित हुआ, क्योंकि इसने कृषि कानून विरोधी आंदोलन की धार को ही कुंद कर दिया। लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं था कि किसानों की सारी समस्याओं का समाधान हो गया है।दरअसल, किसानों की जायज समस्याएं और उनका निदान ऐसे आंदोलनों तथा उस पर होने वाली राजनीति के धुंध में खो जाता है। किसानों का हफ्तों धरने पर बैठना, रास्ते रोकना, आंदोलन का किसानों की आंतरिक राजनीति का शिकार होना, सत्तापक्ष और विपक्षी सरकारों द्वारा इसका ट्रीटमेंट अपने अपने राजनीतिक हितों के नजरिए से करना, एक आम और गरीब किसान का ऐसे आंदोलनों से दूर ही रहना, प्रशासन द्वारा आंदोलनकारी किसानों से कभी नरमी तो कभी सख्ती से निपटना, केन्द्र सरकार द्वारा इस तरह के आंदोलन को प्रायोजित मानकर इसकी उपेक्षा करना, इन किसान आंदोलन के स्थायी बिंदु बन चुके हैं। सवाल यह भी उठते रहे हैं कि खेती के मौसम में किसान इतनी लंबी अवधि तक धरने पर कैसे बैठे रह सकते हैं? उनके आंदोलन का हिस्सा बनने पर खेती का काम कौन संभालता है आंदोलन के चलते अगर खेती पर ध्यान न दिया तो उससे होने वाला नुकसान एमएसपी (न्यूनतम समर्थन मूल्य) पर खरीदी नहीं होने से होने वाली हानि की तुलना में अधिक नहीं है? इसी के साथ यह सवाल भी जुड़ा है कि किसान को लगातार मुश्किल में डालकर सरकार आर्थिकी को बुलेट की रफ्तार से आगे कैसे ले जाएगी ऐसा नहीं है कि सरकार ने किसानों की कोई मांग नहीं मानी हो, लेकिन देश में किसी एक वर्ग को ही सर्वस्व मानकर उसे संतुष्ट करने की राह पर तो कोई सरकार आगे नहीं बढ़ सकती। इस समूची व्यवस्था का किसान एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटक हैं, इससे इंकार नहीं, लेकिन किसान और वो साधन सम्पन्न किसान ही सब कुछ हों, ऐसा भी नहीं है। ऐसा लगता है कि तीन विवादित कृषि कानूनों की वापसी के बाद किसान आंदोलन अपने ही अंतर्विरोधों का शिकार ज्यादा हो गया है।इस बार भी 40 किसानों के छाता संगठन संयुक्त किसान मोर्चे (एसकेएम) ने किसान आंदोलन से दूरी बना ली है। उसका कहना है कि जो कुछ हो रहा है, इसमें उनकी राय नहीं ली गई है। इसी तरह किसान नेता राकेश टिकैत भी इस आंदोलन से दूर है। हरियाणा के किसान संगठनों ने भी अपने हाथ खींच लिए हैं। हालांकि इस बार भी किसानों की मुख्य मांग फसलों पर एमएसपी की कानूनी गारंटी देने की है। आंदोलनकारी किसानों की एक बड़ी समस्या, इस आंदोलन की ताकत का राजनीतिक रुपातंरण न होने की है। मोदी सरकार और भाजपा आंदोलन की इस कमजोरी से वाकिफ हैं। यह भी अपने आप में आश्चर्यजनक है कि जो किसान धूप, बारिश और सर्दी में भी डटकर आंदोलन में खड़ा होता है, चुनावी राजनीति में उसका व्यवहार कुछ और होता है। मसलन तीन कृषि कानून वापसी के पीछे भाजपा का यह भय था कि इसका असर 2022 में हुए यूपी के विधानसभा चुनाव पर न पड़े। क्योंकि पश्चिमी उत्तर प्रदेश के किसान भी इसमें शामिल थे। लेकिन चुनाव नतीजे में भाजपा फिर सत्ता में लौट आई।सबसे हैरान करने वाला परिणाम तो पंजाब विधानसभा चुनाव का था, जहां किसानों के संगठन संयुक्त समाज मोर्चा ने 104 प्रत्याशी चुनाव में खड़े किए, लेकिन इनमें कोई भी जमानत भी नहीं बचा पाया। यह मोर्चा भी किसान आंदोलन में सक्रिय था हालांकि संयुक्त किसान मोर्चे ने चुनाव से दूरी बना ली थी। हाल में हरियाणा के विधानसभा चुनाव ने भी यही साबित किया। बाकी राज्यों के किसानों की इस आंदोलन में भागीदारी नहीं के बराबर है, जबकि समग्रता में देखें तो देश में किसानों की समस्याएं लगभग एक जैसी हैं।अब सवाल यह है कि उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने किसानों की समस्या का मुद्दा उठाकर केन्द्र सरकार को कठघरे में खड़ा क्यों किया? क्या उन्हें लगता है कि मोदी सरकार किसानों की मांगों को केवल राजनीतिक चश्में से देखती है या फिर उन्हे लगा कि किसानो की जायज मांगों के हल के लिए कोई ठोस उपाय अभी भी नहीं किए गए हैं उपराष्ट्रपति की पीड़ा इसलिए भी वाजिब है, क्योंकि उन्हें कोई चुनाव नहीं लड़ना। यह भी संभव है कि वो सरकार पर दबाव बनाना चाहते हों कि उन्हें इसी पद पर दूसरा कार्यकाल मिले। लेकिन इससे यह सवाल डायल्यूट नहीं होता कि किसान आंदोलन पूरी तरह प्रायोजित है और इसका एक मात्र मकसद सरकार को ब्लैकमेल करते रहना है। उपराष्ट्रपति के कहने का आशय यही है कि सरकार किसान संगठनों से बात तो करे। संवाद से ही कुछ समाधान निकलने की संभावना है।इस बीच यूपी सरकार ने किसानों के मुद्दे के निराकरण के लिए पांच सदस्यीय समिति गठित कर दी है। समिति एक माह में अपनी रिपोर्ट देगी। उधर केन्द्रीय कृषि मंत्री शिवराजसिंह चौहान के सामने भी चुनौती है कि वो किसानों की समस्या का निदान कैसे करते हैं? कर भी पाते हैं या नहीं।

गरीब कैदियों को जमानत ना मिल पाना भी अन्याय, आखिर कब मिलेगा न्याय

हमारे देश में गरीब कैदियों का जमानत मिलना एक बहुत मुश्किल और जटिल प्रक्रिया है, जबकि अमीर आरोपी जल्दी रिहा हो जाते हैं। सरकार ने गरीब कैदियों की मदद के लिए योजना बनाई है लेकिन जमीनी स्तर पर स्थिति ज्यों की त्यों हैं। न्याय किसी भी शासन व्यवस्था का एक अभिन्न अंग होता है और समानता उस न्याय व्यवस्था का एक मौलिक आधार है। अगर न्यायिक व्यवस्था में अमीर गरीब के भेद की गुजांइश हो तो वह व्यवस्था न केवल अपूर्ण होती है बल्कि न्याय के बजाय अन्याय को भी जन्म देती है जिसका परिणाम असन्तोष और अराजकता के रूप में सामने आ सकता है। विख्यात् फिल्म अभिनेता सलमान खान को 7 अप्रैल 2018 को जोधपुर की जिला एवं सत्र न्यायाधीश की अदालत से जमानत मंजूर होने पर मात्र कुछ ही घंटों में जेल से रिहा कर दिया जाता है तो वहीं दूसरी ओर सेंटर फॉर रिसर्च एंड प्लानिंग (सीआरपी) की एक रिपोर्ट के अनुसार-

दिसंबर 2023 में ट्रायल कोर्टों द्वारा जमानत मंजूर होने के बावजूद 24,879 गरीब आरोपी जेलों में बंद थे, क्योंकि वे जमानत ब्रॉण्ड पेश नहीं कर सके। यही नहीं देश की जेलों में हजारों की संख्या में विचाराधीन कैदी बिना सजा सुनाए 5 साल से अधिक समय से सजा भुगत रहे हैं। जबकि सुप्रीम कोर्ट 2019 के एक फैसले में कह चुका है कि जमानत राशि का भुगतान न कर पाने की स्थिति में कैदियों को जेल में रखना अवैध और कैदी के संविधानिक अधिकारों का उल्लंघन है। न्यायमूर्ति अभय ओका और ए.जी मसीह की सुप्रीम कोर्ट की खण्डपीठ ने जमानत राशि अदा न कर सकने वाले कैदियों को रिहा न किए जाने पर इसी महीने हैरानी जताई है। इससे पहले भी सर्वोच्च अदालत 2023 और 2021 में इस मुद्दे पर चिन्ता जताने के साथ ही सरकार को गरीब कैदियों की जमानत पर रिहाई की व्यवस्था करने का निर्देश दे चुकी थी, जिसके अनुपालन में केन्द्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने 2023 के बजट में गरीब कैदियों के लिए जमानत पर रिहा होने के लिये वित्तीय सहायता का प्रावधान किया था।इस योजना में जिला कलेक्टरों की अध्यक्षता वाली अधिकार प्राप्त समिति की मंजूरी के आधार पर विचाराधीन कैदियों के लिए 40,000 रुपये और दोषियों के लिए 25,000 रुपये तक की वित्तीय सहायता का प्रावधान है। योजना को लागू करने के लिए 23 मई 2023 को गृह मंत्री अमित शाह ने सभी मुख्य मंत्रियों को और फिर 23 अक्टूबर 2023 को गृह मंत्रालय के उपसचिव अरुण सोब्ती ने सभी राज्यों के गृह सचिवों और पुलिस प्रमुखों को पत्र लिख कर इस योजना को प्रभावी ढंग से लागू करने को कहा था। लेकिन बावजूद इन प्रयासों के अदालत से जमानत मिलने पर भी बड़ी संख्या में गरीब कैदियों का जेल से न छूट पाना हमारी अपराधिक न्याय व्यवस्था पर एक बड़ा प्रश्न चिन्ह ही है।कहां है निष्पक्षता और समानता भारत की न्याय प्रणाली निष्पक्षता और समानता के सिद्धांतों पर आधारित है। मगर व्यवहार में यह प्रणाली उन लोगों को प्राथमिकता देती है जिनके पास धन और प्रभाव है, जिससे वे कानूनी राहत को शीघ्रता से प्राप्त कर लेते हैं। जबकि आर्थिक रूप से कमजोर नागरिक जेलों में पड़े रहते हैं। न्याय भी अक्सर महंगे और सस्ते तथा सुलभ वकीलों पर निर्भर करता है, इसलिए समाज में कई अहंकारी आज भी न्याय खरीदने का दंभ भरते हें। फैसले तक आरोपी निर्दोष माना जाता है देखा जाए तो जमानत का उद्देश्य अभियुक्त के अधिकारों और अदालत में उनकी उपस्थिति सुनिश्चित करने के बीच संतुलन बनाना है। सुप्रीम कोर्ट भी कह चुका है कि न्याय का सिद्धान्त तब तक किसी आरोपी को निर्दोष मानता है जब तक अपराध सिद्ध न हो जाए। सन् 2023 की एक सरकारी रिपोर्ट के अनुसार उस समय भारत की जेलों में 5,73,000 से अधिक कैदियों में 75 प्रतिशत से अधिक ऐसे विचाराधीन हैं जिन पर आरोप सिद्ध नहीं हुए थे। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) की नवीनतम् जेल सांख्यकी के अनुसार 31 दिसम्बर 2021 को भारतीय जेलों में कुल 4,27,165 विचाराधीन कैदी थे जिनमें से 11,490 कैदी अदालत से जमानत मिलने पर भी जेलों में निरुद्ध थे। इन विचाराधीन बंदियों में 382 महलाएं भी थीं। इन विचाराधीन बंदियों में 1,07,946 अनपढ़ कैदी थे जिन्हें अपने अधिकारों और न्यायिक प्रकृया का ज्ञान ही नहीं था। न्याय पर रुतबे और धन का जीता जागता उदाहरण फिल्म अभिनेता सलमान खान का 2018 का मामला है।जमानत पर रिहा न होना मानवाधिकार का हनन जमानत पर रिहा न हो सकने वाले कैदियों की लंबी हिरासत का उन पर और उनके परिवार पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। उनके परिवार मुख्य कमाने वाले को खो देते हैं और वे गरीबी में और गहरे धंस जाते हैं। बच्चों को अक्सर स्कूल छोड़ना पड़ता है। जबकि परिवार जेल में बंद अपने प्रियजनों के कारण कलंक और अलगाव झेलते हैं। ऐसे गरीब बंदियों के परिवार का विभिन्न तरीके से शोषण के मामले भी प्रकाश में आए हैं। भीड़भाड़ वाली, अमानवीय परिस्थितियों में रहना और भविष्य की अनिश्चितता उनकी गरिमा और न्यायिक प्रणाली में विश्वास को नष्ट कर देती है। बरी होने पर उनका जीवन आर्थिक, सामाजिक और मानसिक रूप से अक्सर बहुत प्रभावित हो चुका होता है। जेलें बीमारियों का घर होती हैं। कई विचाराधीन कैदी लम्बे समय बाद जेल से छूट तो जाते हैं लेकिन वे घर पहुंचते हैं तो उनके साथ असाध्य रोग भी होते हैं। नहीं मिल रहा कल्याणकारी कानूनों का लाभ गरीब कैदियों की लंबे समय तक हिरासत को रोकने के लिए कानूनी प्रावधान मौजूद हैं लेकिन उनका क्रियान्वयन अपर्याप्त है। पुरानी दंड प्रक्रिया संहिता (सीआरपीसी) की धारा 436ए उन विचाराधीन कैदियों की रिहाई को अनिवार्य करती है, जिन्होंने उनके आरोपित अपराध की अधिकतम सजा का आधा समय जेल में बिताया जा चुका है। इसी प्रकार, 2005 में मामलों को तेजी से निपटाने और अदालतों पर बोझ कम करने के लिए दोष-स्वीकृति को पेश किया गया था। हालांकि, इन प्रावधानों का उपयोग बहुत कम होता है। जमानत के लिए आर्थिक स्थितियों पर विचार किए बिना केवल वित्तीय जमानत पर निर्भर रहना दंडात्मक प्रणाली को बढ़ावा देता है। गरीबों के लिए कानूनी सहायता सेवाएं, जो उनकी मदद करने के लिए बनाई गई हैं, अक्सर संसाधनों की कमी से जूझती हैं और व्यक्तिगत बांड या सामुदायिक गारंटी जैसे विकल्पों की वकालत करने में विफल रहती हैं। अपराधिक न्याय व्यवस्था स्वयं कठघरे में- भारत की न्याय प्रणाली एक चौराहे पर है। गरीब कैदियों की लगातार कैद, कानूनी प्रावधानों और सरकारी योजनाओं के बावजूद, संवैधानिक आदर्शों को व्यवहार में बदलने में विफलता को दर्शाती है। आर्थिक स्थिति को आजादी तक पहुंच के लिए बाधा नहीं बनने देना न्यायपालिका में विश्वास बहाल करने के लिए आवश्यक है। गरीब कैदियों की दुर्दशा समाज में व्याप्त गहरी असमानताओं की याद दिलाती है। यह नीति-निर्माताओं, कानूनी पेशेवरों और नागरिक समाज के लिए एकजुट होकर एक अधिक समावेशी और न्यायसंगत् प्रणाली बनाने का आह्वान है। सच्चा न्याय तभी संभव है जब हर व्यक्ति, चाहे उसकी आर्थिक स्थिति कुछ भी हो, अपने अधिकारों तक समान पहुंच रखे।

ADHUNIK TUTORIALS

" FOR THE STUDENTS, FROM A STUDENT "

FOR CLASSES 1st 5th

(ADMISSION OPEN)

FACILITIES

- Air Conditioned & Well Furnished Classroom
- Water Cooler Available
- Hygienic Washrooms
- CCTV for Safety Purposes
- In Campus Parking

Dr. (Er)PuneetArora (HON. DIRECTOR)
(B.Tech, M. Tech, MBA , Ph.D)
Awarded with ' Young Scientist & Best Teachers, Author of Many Books Chapters, Research Paper, Patent & Trademarks

Ms.Nilanjana Arora (Assistant Director)

- Ex. Student of Bethany Convent School, Bishop Johnson School & College, Girl's High School & College
- Pursuing B.Tech
- Awarded by TCS
- Certification in the Field of Web Development and Machine Learning .

Ms. Riya Arora (Counsellor)

- Ex. Student of Delhi Public School.
- Subject Topper of Delhi Public School
- Pursuing LLB from University of Allahabad .

Address: B-Block, ADA Colony, Mtek Campus, Naini, Prayagraj .

Contact :- Call and Whatsapp: 8542919234

फोर्टिस के डॉक्टरों ने दुर्लभ विकार से पीड़ित 59-वर्षीय महिला की हाइ-रिस्क रीनल ट्यूमर एक्स्ट्रैक्शन सर्जरी की

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नोएडा। नोएडा फोर्टिस हॉस्पीटल नोएडा के डॉक्टरों ने मल्टीपल वास्क्युलर एनोमलीज़ से पीड़ित 59 वर्षीय एक महिला मरीज की हाइ-रिस्क सर्जरी कर रीनल ट्यूमर को सफलतापूर्वक निकाला। मरीज जन्मजात विकार मल्टीपल वास्क्युलर एनोमलीज़ से ग्रस्त थीं जिसमें अनेक असामान्य रक्त वाहिकाएं गुर्दों को रक्तापूर्ति करती हैं, यह विकार 25000 में से 1 व्यक्ति में ही देखा गया है। सामान्य तौर पर, एक गुर्दे में केवल एक धमनी (आर्टरी), एक शिरा (वेन) और एक मूत्रवाहिका (यूरेटर) होती है, लेकिन इस मामले में, मरीज के शरीर में 4 रीनल आर्टरी और 2 यूरेटर थे। उनके बाएं गुर्दे के निचले भाग से ट्यूमर को निकालना और इससे पहले वहां मौजूद कई धमनियों और शिराओं को बांधना काफी चुनौतीपूर्ण था। लेकिन डॉ पीयूष वार्ष्णेय - डायरेक्टर, यूरोलॉजी एंड किडनी ट्रांसप्लांट, फोर्टिस हॉस्पीटल, नोएडा के नेतृत्व में अस्पताल के डॉक्टरों की टीम ने इस हाइ-रिस्क प्रक्रिया को रोबोटिक पार्शियल नेफ्रेक्टॉमी की मदद से पूरा किया और मरीज को 90 मिनट बाद ही स्थिर अवस्था में अस्पताल से छुट्टी भी दे दी गई। मरीज को शरीर के बाएं भाग में काफी तेज़ दर्द की शिकायत के साथ फोर्टिस नोएडा में भर्ती किया गया था, उन्हें पसलियों से लेकर कूल्हों तक में दर्द था। मरीज का अल्ट्रासाउंड किया गया जिससे उनके बाएं गुर्दे के निचले भाग में एक ट्यूमर का पता चला। इसके अलावा, मरीज की सी.टी. यूरोग्राफी भी की गई जिससे उनके गुर्दे को रक्तापूर्ति करने वाली अनेक असामान्य धमनियों और शिराओं का पता चला। इस कंडीशन के चलते, उनकी रक्तवाहिकाओं को काटने, उन्हें अलग-अलग कर ट्यूमर को बाहर निकालने पर काफी अधिक ब्लीडिंग होने का खतरा था। इस जटिल समस्या के समाधान के तौर पर डॉक्टरों की टीम ने रोबोट-एसिस्टेड पार्शियल नेफ्रेक्टॉमी करने का फैसला किया, जिसने रक्तवाहिकाओं को 10 गुना बड़ा करके दिखाया और डॉक्टरों के लिए इन्हें सावधानीपूर्वक कांट-छांटकर ट्यूमर को निकालना आसान हो गया। मामले की जानकारी देते हुए, डॉ पीयूष वार्ष्णेय - डायरेक्टर, यूरोलॉजी एंड किडनी ट्रांसप्लांट, फोर्टिस हॉस्पीटल, नोएडा ने कहा, इस मामले की जटिलता के मद्देनज़र यह काफी चुनौतीपूर्ण सर्जरी थी, हमें गुर्दे को रक्तापूर्ति कर रही सभी प्रमुख धमनियों की पहचान कर उन्हें बिना क्षति पहुंचाएं काटना था, हरेक धमनी और शिरा को अलग-अलग कर बांधना था ताकि बिना खून बहाए किडनी ट्यूमर को हटाया जा सके। रोबोट की सहायता से पार्शियल (आंशिक) नेफ्रक्टॅमी कर, हमने ट्यूमर को सफलतापूर्वक निकाला और इस प्रक्रिया में आसपास के टिश्यू या रक्तवाहिकाओं को भी कोई नुकसान नहीं पहुंचा। यदि इस ट्यूमर को समय पर नहीं निकाला जाता तो यह किसी भी समय फट सकता था और उस स्थिति में काफी अधिक ब्लीडिंग होती। इस तरह के ट्यूमर के साथ एक समस्या यह होती है कि ये चर्बी और रक्तवाहिकाओं से बने होते हैं और इनके ऊपर से किसी तरह का सुरक्षा कवच नहीं होता। इस वजह से, कई बार एक मामूली चोट से ही यह फट सकते हैं और मरीज को काफी ज्यादा ब्लीडिंग हो सकती है, जिससे ब्लड प्रेशर काफी गिर सकता है।

एसएसपी ने तीन पुलिसकर्मियों को किया निलंबित

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

वाराणसी। रअसल, गीडा इलाके के अमटौरा गांव में मंगलवार को साइकिल हटाने को लेकर विवाद में पड़ोस में रहने वाले आरोपियों ने शिवधनी निषाद (55) की गोली मारकर हत्या कर दी गई। इसके बाद घर के बाहर लगे छप्पर में आग लगाकर मनबढ़ फरार हो गए। इस घटना में लापरवाही मानते हुए एसएसपी ने एक दरोगा व दो आरक्षी के निलंबित कर दिया। गीडा थाना क्षेत्र के अमटौरा गांव में शिवधनी हत्याकांड मामले में तीन पुलिसकर्मियों पर कार्रवाई की गई है। एसएसपी डॉ गौरव ग्रोवर ने लापरवाही बरतने पर गीडा थाने में तैनात दरोगा अजय राज यादव, आरक्षी जितेंद्र यादव और आशीष वर्मा को निलंबित कर दिया है। इनके खिलाफ विभागीय जांच भी शुरू कर दी गई है। सूत्रों की माने को पहले दिन विवाद के बाद अगर पुलिस ने सख्त कार्रवाई की होती तो ये घटना नहीं हो पाती। इसी की आशंका को देखते हुए इस कार्रवाई को जोड़कर माना जा रहा है।

संयुक्त किसान मजदूर संगठन की राष्ट्रीय अध्यक्ष पूनम पंडित को आगरा टोल पर गिरफ्तार करने के संबंध में ज्ञापन

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नोएडा। नोएडा दिनांक 5.12 को समय लगभग 10 बजे संयुक्त किसान मजदूर संगठन की राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व कांग्रेस प्रत्याशी श्याना बुलंदशहर पूनम पंडित को बिना महिला पुलिस के आगरा टोल पर गिरफ्तार किया गया है। उक्त गिरफ्तारी के विरोध में आज दिनांक 5.12.2024 को समय 12 बजे जनपद गौतमबुद्धनगर से संगठन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं कांग्रेस नेता दिनेश अवाना के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं द्वारा सिटी मजिस्ट्रेट कार्यालय सेक्टर 19 पहुंचकर राष्ट्रपति महोदय को संबोधित एक ज्ञापन सिटी मजिस्ट्रेट को ज्ञापन दिया। जनपद-गौतमबुद्धनगर के किसानों द्वारा शांति पूर्वक दलित प्रेरणा स्थल पर धरना प्रदर्शन किया जा रहा था पुलिस प्रशासन द्वारा शासन स्तर से वार्ता कराने का आश्वासन दिया गया था फिर भी अगले दिन दिनांक 3-12-2024 को दोपहर 1 बजे जबरदस्ती किसानों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया जिसके विरोध में दिनांक 4-12-2024 को किसानो द्वारा महापंचायत की गई जिसमें किसानों को पहुंचने नहीं दिया जबरदस्ती घरौ में नजरबंद किया गया यह संविधान का उल्लघंन है उसी सन्दर्भ में संयुक्त किसान मजदूर संगठन अन्तर्राष्ट्रीय शूटर किसान नेता राष्ट्रीय अध्यक्ष पूनम पंडित जी को बिना महिला पुलिस द्वारा आगरा टोल पर गिरफ्तार किया गया है यह संविधान की खुले आम धज्जियां उड़ाई जा रही है अतः महोदया से निवेदन है कि इस ओर ध्यान देते हुए संविधान एवम् किसान मजदूर को शोषण से बचाने के लिए उचित उपाय किए जाएं जिला गौतमबुद्धनगर के किसान नेताओं व पूनम पंडित जी को शीघ्र रिहा किया जाये इनकी समस्याओं का समाधान किया जाये यदि हमारे किसान नेताओं को रिहा नहीं किया गया तों शीघ्र ही निर्णय लैकर बड़ा आन्दोलन किया जायेगा ज्ञापन में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एडवोकेट दिनेश अवाना,राष्ट्रीय महासचिव शाहबुद्दीन, राष्ट्रीय संयोजक राज कुमार भारती, एनसीआर युवा उपाध्यक्ष मोहम्मद चांद, प्रदेश प्रवक्ता सुमन राय, नोएडा युवा महानगर अध्यक्ष जीशान चौधरी, अंश बैरागी,राजू चौहान, सोशल मीडिया गौतमबुद्धनगर जिलाध्यक्ष मोहम्मद गुलफाम, महिला उपाध्यक्ष वीरो देवी,एन सी आर युवा प्रदेश उपाध्यक्ष परवेज,प्रदेश संयोजक राम कुमार शर्मा, सैक्टर पंडित श्याम दीक्षित,आर के प्रथम,सलमा बेगम, नसीम, जावेद खान,हैदर अली, प्रेम, विनोद, इकरार, सुमित,सलीना खातून,बशीदा खातून,नबीसा खातून व अन्य लोग मौजूद रहे ।

बॉलीवुड/टैली मसाला

बिग बॉस 18 ' में अविनाश मिश्रा और रजत दलाल ने किया दिग्विजय राठी पर चार्ज, होगा मिडवीक एविक्शन

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। सलमान खान के जरिए होस्ट किया जाने वाला रियलिटी शो 'बिग बॉस 18' हर गुजरते दिन के साथ और अधिक दिलचस्प होता जा रहा है। मंगलवार के एपिसोड में, दिग्विजय राठी उस समय निराश हो गए जब उनके तीन दोस्तों, करण वीर मेहरा, शिल्पा शिरोडकर और चुम दरंग को छोड़कर पूरे घर ने रजत दलाल का पक्ष लिया और उन्हें नया टाइम गॉड बना दिया। वहीं, आगामी एपिसोड के लेटेस्ट प्रोमो में दिखाया गया है कि दिग्विजय के गुस्से और हताशा के कारण इस सीजन की सबसे बड़ी लड़ाई होगी। रजत दलाल, विवियन डीसेना और अविनाश मिश्रा दिग्विजय पर हमला करते नजर आएंगे। प्रोमो में चारों एक-दूसरे पर चिल्लाते नजर आ रहे हैं और बाकी घरवाले उन्हें बचाते नजर आ रहे हैं ताकि वे एक-दूसरे से न टकराएं। प्रोमो वीडियो सामने आते ही सोशल मीडिया पर छा गया है। वहीं, लोग इस पर ताबड़तोड़ प्रतिक्रियाएं देते नजर आ रहे हैं। कई लोगों ने अपना रिएक्शन देते हुए कहा कि वे अविनाश, विवियन और ईशा सिंह के प्रति निर्माताओं के पक्षपात से थक गए हैं। एक नेटिजन ने लिखा, 'बाहर फेंको का चुगली गैंग को।' जबकि दूसरे ने लिखा, 'फिर से उन्हें कुछ नहीं होगा, यह शो काफी पक्षपाती है।' एक अन्य टिप्पणी में लिखा है, 'मजबूत बने रहें दिग्विजय और करणवीर, घर के दो सबसे सच्चे व्यक्ति।प्रोमो को देखकर साफ हो रहा है कि सलमान खान के जरिए होस्ट किए जाने वाले शो 'बिग बॉस 18' में हिंसा हुई है, जो शो के नियम के खिलाफ है। ऐसे में सोशल मीडिया पर अटकलें लगाई जा रही हैं कि अविनाश मिश्रा या रजत दलाल में से किसी एक को बाहर निकाला जा सकता है। इस तरह शो से मिडवीक एविक्शन की अटकलें तेज हो गई हैं।इस बीच, अनुराग कश्यप, अंजना ओम कश्यप और सौरभ द्विवेदी इस हफ्ते 'बिग बॉस 18' के घर के अंदर प्रतियोगियों के साथ बातचीत करते नजर आएंगे। इस सप्ताह घर से बेघर होने के लिए कुछ बड़े नाम भी नॉमिनेटेड हैं। दिग्विजय राठी, करण वीर मेहरा, शिल्पा शिरोडकर, चुम दरंग, सारा अरफीन खान और कशिश कपूर पर एलिमिनेशन की तलवार लटक रही है। हालांकि, किसका सफर खत्म होगा ये तो वीकएंड का वार में ही पता चलेगा।

प्रीति जिंटा को इस अभिनेता ने सुनाई 'कल हो न हो' की स्क्रिप्ट, फिल्म निर्देशक ने किया खुलासा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। निर्देशक निखिल आडवाणी ने फिल्म 'कल हो न हो' की शूटिंग को लेकर कुछ खुलासे किए हैं। उन्होंने बताया कि अभिनेत्री प्रीति जिंटा को ऋतिक रोशन ने फिल्म की स्क्रिप्ट सुनाई थी। फिल्म निर्देशक निखिल आडवाणी ने फिल्म 'कल हो न हो' से अपने करियर की शुरुआत की। बतौर निर्देशक ये उनकी पहली फिल्म रही। उन्होंने खुलासा किया कि इस फिल्म को न तो करण जौहर ने प्रीति जिंटा को सुनाया न ही उन्होंने खुद। निर्देशक निखिल आडवाणी ने बताया कि इस फिल्म को ऋतिक रोशन ने प्रीति जिंटा को सुनाया था, इस दौरान वे दोनों 'कोई मिल गया' की शूटिंग कर रहे थे। मिर्ची प्लस से बातचीत में निखिल आडवाणी ने बताया, ठहम वहां मौजूद भी नहीं थेठ, उन्होंने आगे कहा कि शाहरुख खान या करण जौहर ने प्रीति को फोन करके बताया कि ऋतिक ने स्क्रिप्ट सुनी है। उन्होंने अभिनेत्री से पूछा कि क्या वह इसे सुनने के लिए तैयार हैं और आडवाणी ने कहा, फिल्म की अपनी नियति थी। निखिल आडवाणी ने 'कल हो न हो' फिल्म के निर्माता यश जौहर के बारे में भी बात की। उन्होंने बताया कि वे नौ दिन तक टोरंटो में फिल्म की शूटिंग की लेकिन वे उदास थे। जब यश जौहर ने उन्हें ऐसी हालत में देखा तो उन्होंने इसका कारण पूछा। उन्होंने बताया कि वे फिल्म की शूटिंग को लेकर असंतुष्ट हैं। ऐसे में उनकी बात सुनकर यश जौहर ने उन्हें न्यूयॉर्क भेज दिया साल 2003 में आई इस फिल्म को प्रशंसक आज भी पसंद करते हैं। शाहरुख खान की फिल्म 'कल हो ना हो' ने अपनी इमोशनल स्टोर से दर्शकों का दिल जीत लिया था। फिल्म की कहानी में अमन यानी शाहरुख खान नैना यानी प्रीति जिंटा के किरदार को जिंदगी जीना और प्यार करना सिखाता है। आखिर में पता चलता है कि अमन एक बीमारी से पीड़ित है और जल्द ही मर जाएगा। इस स्टोरी लाइन पर फिल्म 'कल हो ना हो' फिल्म बनाई गई थी। फिल्म में सैफ अली खान ने भी दूसरे हीरो का रोल निभाया था।

अक्षय कुमार पर चढ़ा गायिकी का खुमार, 'मुझ में तू' गाना गुनगुनाकर जीत लिए दिल

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। अक्षय कुमार का एक वीडियो सोशल मीडिया पर ताबड़तोड़ वायरल हो रहा है। इसमें अभिनेता अपनी फिल्म 'स्पेशल 26' का गाना 'मुझ में तू' गुनगनाते नजर आ रहे हैं। अक्षय कुमार बॉलीवुड के सबसे व्यस्त अभिनेताओं में से एक हैं। उन्हें 2024 में कई फिल्मों में देखा गया और उनके पास आगे परियोजनाओं की एक रोमांचक लाइनअप है। अपने व्यस्त कार्यक्रम के बीच, अक्षय ने एक शादी की शोभा बढ़ाई और अपनी फिल्म 'स्पेशल 26' का गाना 'मुझ में तू' गाकर मेहमानों को मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्हें दूल्हा और दुल्हन पर प्यार बरसाते भी देखा गया। इवेंट का यह वीडियो सोशल मीडिया पर सामने आते ही वायरल हो गया है। अक्षय कुमार के एक फैन पेज ने हाल ही में एक शादी में प्रदर्शन करते हुए अभिनेता का एक वीडियो साझा किया। वीडियो में खिलाड़ी कुमार ऑल ब्लैक अटायर में बेहद डैशिंग लग रहे हैं। अक्षय ने आकर्षक ट्रेंच कोट और ट्राउजर के साथ काले जूते पहने थे। उन्होंने अपने लुक को सिल्वर चेन से एक्सेसराइज किया। वीडियो में अक्षय को स्टेज पर एक हाथ जेब में और दूसरे हाथ में माइक पकड़े देखा जा सकता है। भीड़ के हूटिंग करते ही उन्होंने 'मुझ में तू' गाना शुरू कर दिया। इसके बाद वह स्टेज पर बैठे दूल्हा-दुल्हन की ओर बढ़े। अक्षय उनके पीछे खड़े हो गए और अपना गाना जारी रखा। पोस्ट के कैप्शन में लिखा है, 'अक्षय कुमार ने पिछले हफ्ते एक शादी में गाना गुनगुनाया।' अक्षय कुमार को हाल ही में कॉप यूनिवर्स की फिल्म 'सिंघम अगेन' में देखा गया था, जहां उन्होंने वीर सूर्यवंशी के रूप में अपनी भूमिका दोहराई थी। रोहित शेट्टी द्वारा निर्देशित इस फिल्म में अजय देवगन, करीना कपूर खान, रणवीर सिंह, दीपिका पादुकोण, टाइगर श्रॉफ, अर्जुन कपूर और जैकी श्रॉफ भी मुख्य भूमिका में हैं। अक्षय कुमार की अगली फिल्म 'स्काई फोर्स' है। यह सच्ची घटनाओं पर आधारित है और इसमें भारत के पहले और सबसे घातक हवाई हमले को दिखाया जाएगा। रिपोर्ट की मानें तो यह फिल्म 24 जनवरी, 2025 को सिनेमाघरों में दस्तक देगी। इसके अलावा अक्षय के पास सी. शंकरन नायर की एक अनटाइटल्ड फिल्म 'जॉली एलएलबी 3', 'हाउसफुल 5' और कई अन्य प्रोजेक्ट हैं।

राजकपूर संग काम करने की चाहत ने बना दिया पर्दे पर खलनायिका प्यार में भी मिला धोखा

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। 50 के दर्शक में फिल्मों में वैंप यानी खलनायिका का लुक भी हीरोइन जैसा ही हुआ करता था लेकिन नादिरा ने इस छवि को बदलकर रख दिया। वह पर्दे पर अपने बोल्ड अंदाज के लिए जानी गईं। जानिए, अभिनेत्री नादिरा के जीवन से जुड़ी कुछ खास बातें। यहूदी परिवार में जन्मी नादिरा उर्फ फ्लोरेंस एजेकील ने बॉलीवुड फिल्मों में बतौर अभिनेत्री ही शुरुआत की थी। फिल्म 'आन' में वह दिलीप कुमार की हीरोइन बनीं, बतौर हीरोइन यह उनकी पहली फिल्म रही। इसके बाद नादिरा ने कई फिल्मों में काम किया, जिनमें वह मुख्य अभिनेत्री की भूमिका में रहीं। नादिरा बॉलीवुड में एक चर्चित अभिनेत्री बन गई थी लेकिन राजकपूर के साथ फिल्म ' श्री 420' का ऑफर स्वीकार करना उनके करियर का टर्निंग प्वाइंट साबित हुआ। आज 50 के दशक की इसी चर्चित अभिनेत्री नादिरा का जन्मदिन (5 दिसंबर1932) है। नादिरा के फिल्म करियर और जिंदगी से जुड़ी कुछ खास बातों के बारे में जानिए। नादिरा बतौर हीरोइन हिंदी फिल्मों में स्थापित हो चुकी थी। वह राजकपूर की बहुत बड़ी फैन भी थी। ऐसे में नादिरा के पास फिल्म 'श्री 420' का ऑफर आया, इसमें राजकपूर उन्हें खलनायिका के किरदार में लेना चाहते थे। नादिरा ने एक बार भी नहीं सोचा और राजकपूर की इस फिल्म को करने के लिए हामी भर दी। फिल्म बॉक्स ऑफिस पर खूब चली। इसमें नरगिस ने हीरोइन का रोल और नादिरा ने वैंप का रोल किया था। फिल्म 'श्री 420' में नादिरा का बोल्ड अंदाज भी खूब चर्चा में रहा। लेकिन इस फिल्म के बाद उन पर खलनायिका का टैग लग गया। आगे नादिरा को ऐसे ही किरदार ऑफर हुए। अपनी छवि को बदलने की कोशिश भी नादिरा ने की, लेकिन वह सफल नहीं हुईं। आखिर में नादिरा ने फिल्मों में नेगेटिव रोल ही स्वीकार करना शुरू कर दिय ऐसा माना जाता है कि नादिरा अपने समय में सबसे ज्यादा फीस लेने वाली अभिनेत्री रही। साथ ही वह पहली एक्ट्रेस थी जिन्होंने रॉल्स रॉयल्स कार खरीदी थी। वह एक शाही जिंदगी जीने की शौकीन अभिनेत्री थी, इसलिए खुद पर खुलकर खर्च करती थीं। फिल्मों में नादिरा को मनचाही सफलता मिली लेकिन वह प्यार में पूरी तरह से असफल रहीं। नादिरा ने दो शादियां की और दोनों ही रिश्तों में उन्हें प्यार नहीं मिला। पहली शादी गीतकार नक्शाब से की लेकिन पति की बेवफाई से तंग आकर नादिरा ने उनका साथ छोड़ दिया, उन्हें तलाक दे दिया। इसके बाद एक अरब मूल का व्यक्ति नादिरा के जीवन में आया और दोनों ने शादी कर ली। नादिरा को पता चला कि वह व्यक्ति उनके पैसों के पीछे पड़ा है और कुछ काम भी नहीं करता है। ऐसे में नादिरा ने अपने दूसरे पति को भी छोड़ दिया जब तक नादिरा यंग नजर आईं, वह फिल्मों में खलनायिका या वैंप के रोल करती रहीं। उम्रदराज होने पर उन्होंने फिल्मों में मां की भूमिकाएं करना शुरू कर दिया। फिल्म 'जूली (1975) और 'जोश' (2000) जैसी कई और फिल्मों में नादिरा ने मां की भूमिकाएं निभाई। कई फिल्मों में उनके किरदार को काफी पसंद भी किया गया। टीवी पर भी उन्होंने कुछ धारावाहिकों में अभिनय किया। नादिरा ने जितनी शोहरत करियर के शुरुआत में पाई, उतना ही अकेलापन अंतिम समय में उनके जीवन में मौजूद रहा। आखिर समय में वह काफी बीमार रहने लगी थी, उनके साथ बस एक मेड रहा करती थी। दरअसल, नादिरा के परिवार के सभी सदस्य देश छोड़कर, दूसरे देशों में बस गए थे। मगर नादिरा ने अपनी कर्मभूमि भारत में ही रह जाने का फैसला लिया।

सलमान खान के शूटिंग सेट पर घुसा अनजान शख्स

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। बॉलीवुड सुपरस्टार सलमान खान के शूटिंग सेट पर कथित तौर पर एक अनजान व्यक्ति घुस गया। पूछताछ करने पर शख्स ने गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई का नाम लेकर धमकाने की कोशिश की। बॉलीवुड सुपरस्टार सलमान खान के शूटिंग सेट पर कथित तौर पर एक अनजान व्यक्ति घुस गया। पूछताछ करने पर शख्स ने गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई का नाम लेकर धमकाने की कोशिश की। रिपोर्ट्स के अनुसार, इस घटना की जानकारी एक अधिकारी ने दी है। अधिकारी ने बताया कि संदिग्ध को तुरंत पकड़ लिया गया और पूछताछ के लिए शिवाजी पार्क पुलिस स्टेशन ले जाया गया। पुलिस सूत्रों के अनुसार, यह घटना उस समय हुई, जब संदिग्ध व्यक्ति उस सेट पर पहुंचने में कामयाब हो गया, जहां सलमान खान शूटिंग करने वाले थे। पुलिस फिलहाल इस मामले की जांच कर रही है। दरअसल, बुधवार रात मुंबई के जोन 5 में बॉलीवुड अभिनेता सलमान खान की शूटिंग लोकेशन पर एक संदिग्ध व्यक्ति घुस आया। दादर इलाके में हुई इस घटना के बाद अधिकारियों ने तुरंत कार्रवाई की

पुष्पा 2 बॉक्स ऑफिस कलेक्शन, फिल्म ने प्रीमियर के कुछ घंटों में कमाए करोड़ों

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। पुष्पा 2 के बॉक्स ऑफिस कलेक्शन पर सभी की नजरें हैं। अल्लू अर्जुन की फिल्म पुष्पा 2ः द रूल आखिरकार रिलीज हो गई है और फिल्म का क्रेज दर्शकों के बीच आग की तरह फैल रहा है। पहली फिल्म पुष्पा द राइज की बॉक्स ऑफिस पर धमाकेदार ओपनिंग की उम्मीद कर रही है। पहली फिल्म के तीन साल बाद यह फिल्म रिलीज हुई है। फिल्म ने प्रीमियर के कुछ घंटों में कर ली है करोड़ों की कमाई।अल्लू अर्जुन और रश्मिका मंदाना की बहुचर्चित फिल्म पुष्पा 2 द रूल रिलीज हो चुकी है और जमकर कमाई कर रही है। पुष्पा 2 बॉक्स ऑफिस कलेक्शन डे 1 के बात करें तो अल्लू अर्जुन स्टारर रिलीज के तीन साल बाद फिल्म पुष्पा2 द रूल रिलीज हुई है। सिनेमाघरों से वीडियो सोशल मीडिया पर काफी शेयर किए जा रहे हैं, वहीं सभी की नजरें फिल्म के बॉक्स ऑफ़िस कलेक्शन पर हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक, पुष्पा 2 ने बॉक्स ऑफिस पर अपने पहले दिन की शुरुआत शानदार तरीके से की है। ऍम्हग्त्व् के अनुसार, सुबह 8 बजे तक पुष्पा 2 ने बॉक्स ऑफिस पर 21.04 करोड़ रुपये का कलेक्शन कर लिया है। उम्मीद है कि फिल्म बॉक्स ऑफिस पर शानदार कारोबार करेगी। के अनुसार, पुष्पा 2 ने पहले ही विदेशों में 30 करोड़ रुपये से अधिक की कमाई कर ली है, जबकि बुधवार को फिल्म के प्रीमियर से पहले घरेलू बिक्री 70 करोड़ रुपये से अधिक हो गई थी। इसके साथ ही पुष्पा 2ः द रूल इस साल की दूसरी भारतीय फिल्म बन गई है जिसने एडवांस बुकिंग में 100 करोड़ रुपये का आंकड़ा पार किया है। इससे पहले प्रभास की कल्कि 2898 एडी थी ने इस सप्ताह की शुरुआत में खुलासा किया था कि पुष्पा 2 ने पहले ही प्लेटफॉर्म पर 1 मिलियन टिकट बेच लिए हैं, जिससे यह सबसे तेज आंकड़ा पार करने वाली फिल्म बन गई है। सभी रिकॉर्ड तोड़ते हुए, पुष्पा 2ः द रूल बुकमायशो पर सबसे तेज गति से 1 मिलियन टिकट बेचने वाली फिल्म बन गई है, जिसने कल्कि 2898 ई., बाहुबली 2ः द कन्क्लूजन और केजीएफः चैप्टर 2 को पीछे छोड़ दिया है। हैदराबाद, बेंगलुरु, मुंबई, दिल्ली-एनसीआर और पुणे के साथ देश भर में बुकमायशो पर अपने टिकट बुक करवाने के लिए प्रशंसकों में होड़ मच गई।ठ अल्लू अर्जुन स्टारर इस फिल्म को शानदार समीक्षा मिल रही है। कई साइट्स पर पुष्पा 2 को 5/5 रेटिंग दी गई है और फिल्म की स्टार कास्ट की जमकर तारीफ की जा रही है। खासतौर पर अल्लू अर्जुन की तारीफों के पुल हर जगह छा गए हैं। पुष्पा 2ः द रूल फलॉवर नहीं वाकई में वाइल्ड फॉयर है। पुष्पा 2 अपनी मनोरंजक कहानी, शानदार अभिनय और लोगों को आकर्षित करने वाली फिल्म के साथ, यह साल की सबसे मनोरंजक फिल्म मानी जा रही है।

पायल राजपूत ने पंजाबी फिल्म चन्ना मेरेया से की थी करियर की शुरुआत, सनी लियोनी के साथ किया काम

(आधुनिक समाचार नेटर्वक)

नई दिल्ली। टीवी शोज के अलावा पंजाबी, तेलुगु और हिंदी फिल्मों में काम कर चुकी पायल राजपूत आज अपना 32वां जन्मदिन मना रही हैं। इस खास मौके पर आइए जानते हैं पायल से जुड़ी दिलचस्प बातें। पायल राजपूत एक भारतीय अभिनेत्री हैं, जो मुख्य रूप से तेलुगु और पंजाबी फिल्मों में काम करती हैं। उन्होंने पंजाबी फिल्म चन्ना मेरेया से अपने फिल्मी करियर की शुरुआत की थी। इस फिल्म के लिए पायल को सर्वश्रेष्ठ डेब्यू अभिनेत्री का फिल्मफेयर पंजाबी पुरस्कार भी मिला था। इसके बाद पायल ने वीरे की वेडिंग से हिंदी फिल्मों में डेब्यू किया था। पायल राजपूत ने कई हिंदी टीवी शोज में काम किया है। लेकिन पायल को महाकुंभ सीरियल में उनकी मुख्य भूमिका के लिए जाना जाता है। पायल राजपूत की फिल्में 100 एक हिट साबित हुई थी। इस फिल्म की सफलता के बाद पायल को कई बड़े ऑर्फस मिलने की उम्मीद थी, लेकिन उनका करियर कुछ उलट गया। जी हां, एक समय था जब पायल राजपूत को मुख्य भूमिका में स्टार बनने की उम्मीदें थीं, लेकिन एक नकारात्मक भूमिका में नजर आने के बाद उनका करियर अस्थिर हो गया। आजकल पायल का करियर वेब सीरीज और सोशल मीडिया तक ही सीमित रह गया है। यही वजह है कि लाइमलाइट में रहने के लिए पायल सोशल मीडिया पर अपने ग्लैमरस फोटोशूट साझा करती रहती हैं। ग्लैमर की बात करें तो पायल आमतौर पर आधुनिक कपड़ों, स्विम ड्रेस और बीच ड्रेसेस में ही दिखती हैं लेकिन वह अपनी बोल्ड इमेज के लिए प्रशंसकों के बीच काफी लोकप्रिय हैं। पायल राजपूत ने हिंदी, पंजाबी और तेलुगु फिल्मों में काम किया है। उन्होंने पंजाबी फिल्म चन्ना मेरेया (2017) से अपने फिल्मी करियर की शुरुआत की थी और फिर वीरे की वेडिंग (2018) से हिंदी फिल्म में डेब्यू किया था। सनी लियोन, पायल राजपूत की जोड़ी 'गिन्ना' में मंचू विष्णु के साथ नजर आई थी। इसका ट्रेलर लॉन्च हैदराबाद में हुआ था।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक डा0 दीपक अरोरा द्वारा रामा प्रिन्टर्स 53/25/1 ए बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज (उ.प्र.) 211002 से मुद्रित एवं सी-41 यूपी एसआईडीसी औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज। (उ.प्र.) 211010 से प्रकाशित।

सम्पादक/प्रकाशक
डा0 पुनीत अरोरा
मो0न0 09415608710
RNI No. UPHIN/2015/63398

website:www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगे।